संजय की कलम से –

कमल समान पवित्र जीवन

अन्य पुष्पों की अपेक्षा कमल की यह विशेषता है कि वह पानी में रह कर भी पानी से ऊपर उठकर अलिप्त रहता है। कमल का एक नाम 'पंकज' भी है क्योंकि यद्यपि वह कीचड़ में जन्म लेता है तथापि कीचड़ उसे स्पर्श नहीं कर पाता। इसलिये भारत के आध्यात्मिक साहित्य में अथवा धार्मिक वाङ्मय में कमल को अलिप्त एवं पवित्र जीवन का प्रतीक माना गया है।

कमल में एक और भी विशेषता है, इस फूल का अपना ही एक कुटुम्ब अथवा परिवार होता है जिसके सदस्य कमल-ककड़ी और कमल गट्टा इत्यादि होते हैं, परन्तु इन सबके संग रहते हुए भी कमल इनसे न्यारा और प्यारा बना रहता है। इसी प्रकार, जो लोग मोह, मद, मत्सर इत्यादि से भरे इस संसार में अपने पारिवारिक जीवन के कर्त्तव्यों को निभाते हुए भी इनसे अलिप्त रहते हैं, वे भी कमल के समान ही हैं।

एक ग़लत धारणा

संसार में कुछ लोग ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि यहाँ तो मोह के बिना गृहस्थी को चलाया ही नहीं जा सकता, क्रोध के बिना लोगों से अपनी बात मनवाई ही नहीं जा सकती और अहंकार के एक सुन्दर रूप 'रोब' के बिना दूसरों से काम निकाला ही नहीं जा सकता। गोया उनके कहने का भाव यह होता है कि इस संसार में मन को शुचिता अथवा पवित्रता में रखते हुए मनुष्य सांसारिक कर्त्तव्यों को निभा ही नहीं सकता। परन्तु वास्तव में मानव की यह मान्यता उसे आत्मिक विकास के मार्ग में आगे नहीं बढ़ने देती और इसलिए यह हानिकर है। हम देखते हैं कि हरेक मनुष्य में पवित्रता को अपनाने की इच्छा अवश्य होती है। यह अलग बात है कि किसी व्यक्ति का मन इतना दुर्बल हो गया हो कि वह आज के दूषित वातावरण के रंग में रंग जाता हो। परन्तु यह दुर्बलता मनुष्य की अन्तरात्मा का स्वाभाविक लक्षण नहीं है, तभी तो प्राय: हरेक व्यक्ति के मन में बुराई के प्रति विरोध अथवा विद्रोह की भावना उत्पन्न हुआ करती है। अत: पुरुषार्थ की सही दिशा तो मनोबल को बढ़ाकर पवित्रता के पथ को अपनाना ही है, छोड़ना नहीं।

उच्च लक्ष्य से उच्च लक्षण

जो मनुष्य कमल-सम जीवन को अपना लक्ष्य मान लेता है, उसे संसार की कोई भी वस्तु अपने प्रलोभन के कुचक्र में नहीं फँसा सकती बल्कि वह व्यक्ति जिन वस्तुओं को अनिवार्य मानता है अथवा जिनकी आवश्यकता अनुभव करता है, वह मोहग्रस्त हुए बिना तथा इन्द्रियों का दास बने बिना ही उनका उपयोग करता है; उसे उनकी तृष्णा सताती नहीं। वह कर्त्तव्यपरायण होने के भाव से, परोपकार भाव से और लोक-संग्रह को ध्यान में रखते हुए, समाज सेवा के विचार से अपने सद्गुणों के विकास का लक्ष्य सामने रखते हुए कुशलतापूर्वक कार्य करता रहता है। वह दिनोंदिन आत्मा को बलिष्ठ बनाता है और दुर्गुणों तथा दुर्बलताओं से ऊँचा उठता जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि मनुष्य का जैसा लक्ष्य हो वैसे उसमें लक्षण आने लगते हैं।

अमृत-सूच ी

- दिव्य गुणों की धारणा (सम्पादकीय) 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 7
- बुरा मत मानो 9
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- वैश्विक शिखर सम्मेलन (समाचार) 11
- परमात्मा का अद्भुत चमत्कार 16
- ज्ञानयुक्त - व्यर्थमुक्त 17
- क,ख,ग,घ का अर्थ 18
- कैसी यह दीवाली है (कविता) 20
- भगवान ने कहा, बच्ची साफ दिल और सच्ची है 21
- दूसरों के लिए कुछ करने का सपना 23
- आपसी सम्बन्धों में समरसता 25
- श्रद्धांजली 26
- मेरे संग संग चलते हैं बाबा 27
- ''मेरे साथ क्या हो रहा है'' इसे छोड़ ''मुझे क्या करना है'' इस पर ध्यान दो 28
- कहीं गाड़ी छूट न जाए (कविता) 29
- बुराई का अभिमान और अच्छाई का अभिमान 30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- दिव्य अनुभूतियों को बढ़ाते चलें 34

सम्पादकीय . . .

दिव्य गुणों की धारणा

हम आम बोलचाल में सभी गुणों को 'दैवी गुण' कह देते हैं परन्तु वास्तव में उनमें से कुछ गुण दैवी गुण न होकर 'ईश्वरीय गुण' हैं और कुछ 'सद्गुण' अथवा 'मानवीय गुण' हैं। ईश्वरीय गुण इन सभी में से उच्च हैं और विशेष कल्याणकारी हैं। उनकी धारणा से ही एक नये, सतयुगी, दैवी समाज की स्थापना होती है। अत: जबकि हम सतयुग की स्थापना के कार्य में लगे हैं तो हमें गुणों के इस भेद को जानकर ईश्वरीय गुणों की धारणा पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

मानवीय गुण, दैवी गुण और ईश्वरीय गुण में अन्तर

इस भेद को स्पष्ट करने के लिए कुछेक गुणों को उदाहरण के रूप में सामने रखना श्रेयस्कर होगा। इसी उद्देश्य से हम 'वीरता' ही पर विचार कर लेते हैं। यह तो निश्चित है कि केवल वही मनुष्य 'वीर' हो सकता है जो अभय हो। यह तो मानना पड़ेगा कि मृत्यु को सामने देखते हुए भी उससे न डरना एक बहुत ही बड़ा गुण है। देश के लिए अपनी जान देने को तैयार हो जाना, एक बहुत ही सराहनीय साहस है। इसी प्रकार, कदम-कदम पर मार्ग की कठिनाइयों, संकटों एवं खतरों का सामना करते हुए हिमालय की चोटी की ओर बढ़ते जाना भी अदम्य साहस, प्रबल उत्साह और निर्भय स्थिति का प्रतीक है। जिन मनुष्यों ने पहले-पहले अन्तरिक्ष यान में चाँद पर जाना स्वीकार किया, उन्होंने कितने भीषण खतरे का सामना किया! अत: निश्चय ही 'वीरता', 'निर्भयता' अथवा 'साहस' महान मानवीय गुण है। परन्तु हम इसे 'दिव्य गुण' नहीं कहेंगे क्योंकि इस गुण को धारण करने वाले व्यक्ति 'देवता' नहीं हैं, न ही वे इसकी धारणा से देवता बन जाते हैं।

पुनश्च, सतयुग के देवताओं में भी यह गुण इस रूप में नहीं होता क्योंकि उनके सामने भय की कोई स्थिति ही उपस्थित नहीं होती; ऐसी वीरता प्रदर्शित करने का कोई अवसर ही उनके सामने उपस्थित नहीं होता।

फिर हम देखते हैं कि यद्यपि वीरता एक मूल्यवान मानवीय गुण है तथापि इस गुण की धारणा से किसी नये समाज की स्थापना नहीं हुई। वीरता का गुण धारण अथवा प्रदर्शित करके व्यक्तियों, जातियों अथवा देशों में रक्तपात हुआ है, शीत युद्ध छिड़ा है अथवा होड़ लगी है। वे अपने वीरों की महिमा करके दूसरों की उकसाहट के निमित्त बने हैं और जोश अथवा अहंभाव से अभिभूत हुए हैं। कभी तो वीरता के नशे में वे धीरज को, सहनशीलता को, अहिंसा को अथवा भ्रातृत्व को खो बैठे हैं और कभी वे दूसरों को दीन मानकर मिथ्या गर्व के वशीभूत हुए हैं। एक वीर से दूसरे वीर ने टक्कर लेने की कोशिश की है अथवा उसका रिकार्ड तोड़ने ही का यत्न किया है। उनके मन में खुशी की बजाय ईर्ष्या ने स्थान लिया है और एक ने दूसरे की वीरता को अपने मान-अपमान का प्रश्न बना लिया है। वह सब न भी हो तो ऐसे वीरों की गाथाएँ कोई देव-गाथाएँ नहीं हैं। उनका यशोगान कोई देवगान नहीं है। यद्यपि कवियों ने देवों को भी अपनी कृतियों में इस गुण से अलंकृत किया है तथापि हम जानते हैं

कि वास्तव में अहिंसक देवताओं के गुण क्या होते हैं।

गुणों की ईश्वरीय व्याख्या

इसी 'वीरता' नामक गुण की नई व्याख्या देकर अथवा इसके प्रति नया दृष्टिकोण देकर शिव बाबा ने इसे सद्गुण के रूप में हमारे सामने रखा है। जब हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष आदि का सामना करते हैं और इन पर विजय प्राप्त करते हैं, तब यही गुण 'सद्गुण' बन जाता है। जब हम आध्यात्मिक यात्रा के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के लिए इन विकारों रूपी संकटों को या मार्ग की कठिनाइयों को पार करते हैं तो हम सात्त्विक रूप में 'महावीर' होते हैं। ऐसे वीर को भी 'अभय' तो होना ही पड़ता है। वह लोक-निन्दा के भय और समाज द्वारा बहिष्कार या तिरस्कार के भय को पार करता है। उसकी यह परिस्थिति रण-क्षेत्र के भय की अपेक्षा अधिक समय तक बनी रहती है। वह विरोधी मन वालों के अत्याचारों का भी सामना करता है और उन द्वारा

किए गए अट्टहास का तथा असहयोग का भी वीरता एवं साहस से मुकाबला करता है। स्थूल रूप में भय की बात तो एक ओर रही, शिव बाबा ने तो बताया है कि योगी को सभी प्रकार की आशंकाओं से भी ऊपर उठना पड़ता है। ''क्या होगा, कैसे होगा, पता नहीं सफलता होगी या नहीं होगी'' – इस प्रकार के सूक्ष्म भय की अभिव्यक्ति वाले प्रश्न भी योगी के मन में नहीं उठ सकते। वह तो माया को चुनौती देने वाले महावीर के रूप में आध्यात्मिक शक्ति की विजय के निश्चय में स्थित होता है। वह एक अकेला असंख्य विघ्नों से जूझने को उद्यत होता है और भविष्य के खटके तथा वर्तमान की हलचल में भी वह अंगद के समान अटल होकर खड़ा हो जाता है। योद्धा तो रण-क्षेत्र में मृत्यु से न डरते हुए स्वयं को मृत्यु से बचाता है परन्तु आध्यात्मिक पुरुषार्थ वाला महावीर तो कदम-कदम पर मरने अथवा 'मरजीवा' बनने को तैयार रहता है। इस प्रकार की वीरता को आप चाहें तो इस अर्थ में दिव्य गुण कह सकते हैं कि इससे मनुष्य का जीवन दिव्य बनता है और वह भविष्य में देवता बनता है।

दूसरा उदाहरण

इसी चर्चा के अधिक स्पष्टीकरण के लिए अब एक और उदाहरण पर विचार कीजिये। गीता में गुणों की चर्चा करते हुए अभय के अतिरिक्त दान को भी दैवी गुणों में गिना गया है। परन्तु हम जानते हैं कि देवताओं के लोक में तो इस गुण की अभिव्यक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि वहाँ तो कोई दुखी और दरिद्र होता ही नहीं कि उसे 'दान' दिया जाए। दान तो एक मानवोचित गुण है क्योंकि इस मनुष्य लोक में ही दीन-दु:खी, असहाय और असमर्थ लोग होते हैं जिन पर दया करने और जिन्हें दान देने की आवश्यकता है। फिर, जिस रूप में मनुष्य पिछले दो युगों से दान-पुण्य करते आये हैं, उससे तो नये, सतयुगी एवं दैवी समाज की पुनर्स्थापना हुई नहीं बल्कि शोषक एवं शोषित दो वर्ग बने रहे हैं अथवा समाज दानी और दरिद्र – इन दो भागों में विभाजित रहा है। ऐसे समाज में जो अधिक दान करता हो, उसे लोग 'दानवीर' तो कहते रहे हैं परन्तु इस प्रकार के दान से और ऐसी वीरता से संसार स्वर्ग तो बना नहीं।

अब शिव बाबा ने इस गुण की भी हमें नई व्याख्या दी है। उन्होंने हमें समझाया है कि ज्ञान, गुण और योग का दान ही ऐसा दान है जिससे कि सतयुग की स्थापना हो सकती है

क्योंकि ऐसा दान लेने वाला भी दीन-हीन नहीं बना रहता बल्कि वह ऐसा समर्थ बन जाता है कि दूसरों को भी ज्ञान धन देने के योग्य हो जाता है। ऐसा दान देने वाले के मन में भी आत्म-ग्लानि नहीं होती क्योंकि यह धन ईश्वर का दिया हुआ है; यह किसी मनुष्य की निजी जायदाद नहीं है। यह दान लेने वाला सदा के लिए मांगना बन्द कर देता है और दान देने वाला भी स्वयं को 'दाता' नहीं मानता बल्कि स्वयं को निमित्त-मात्र मानता है। यों आम बोलचाल में लोग सहायता देने के कर्म को 'योगदान' अथवा 'सहयोग' कहते तो हैं परन्तु वे योग का दान तो देते नहीं, इसलिए उनके संदर्भ में 'योगदान' अथवा 'सहयोग' शब्द में 'योग' शब्द निरर्थक ही रह जाता है। परन्तु ये दोनों शब्द (योगदान और सहयोग) इस बात के सूचक हैं कि वास्तव में 'योग' का दान अथवा योग द्वारा सहायता ही विशेष रूप से सहयोग है। इस प्रकार के दान अथवा सहयोग से ही मनुष्यात्मा का तथा विश्व का कल्याण होता है और सतयुग की स्थापना होती है। ऐसा दान सद्गुण है और ईश्वरीय गुण भी है क्योंकि जब परमपिता परमात्मा अवतरित होते हैं तो वे ऐसा दान देते हैं और इस अर्थ में ही हमें 'महादानी', 'वरदानी' या 'विश्व-कल्याणी' बनने के लिए कहते हैं। इसी प्रकार से 'सेवा', 'यज्ञ', 'त्याग' इत्यादि गुणों की भी शिव बाबा ने हमें नई व्याख्या दी है।

कुछेक अन्य उदाहरण

अब सहनशीलता नामक गुण पर विचार कीजिये। सतयुग में देवी-देवताओं को कुछ भी सहन नहीं करना पड़ता क्योंकि उनका न तो विरोध होता है, न ही उनके सामने कोई विघ्न होते हैं। अत: यह गुण भी एक सद्गुण ही है। यद्यपि इस गुण को धारण करने वाला मनुष्य 'देवता पद' की ओर बढ़ता है।

हाँ, हर्षितमुखता एक सद्गुण भी है और दैवी गुण भी। इसी प्रकार, सन्तुष्टता भी सद्गुण और दैवीगुण दोनों है। किन्तु देवताओं की हर्षितमुखता एवं सन्तुष्टता स्वाभाविक है जबकि अब संगमयुग में हम इस गुण को ऐसी परिस्थितियों में भी धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं जो परिस्थितियाँ इसकी विरोधी अथवा बाधक हों। पुनश्च, देवताओं की और हमारी हर्षितमुखता एवं सन्तुष्टता के कारण, आधार एवं स्वरूप में अन्तर है।

इसी प्रकार अनासक्ति, निरहंकारिता या निर्विकारिता दैवी गुण भी हैं और सद्गुण भी। साथ ही साथ ये ईश्वरीय गुण भी हैं क्योंकि ईश्वर सदा निर्विकार, नम्रचित्त और निरहंकार है।

संक्षेप में कहने का भाव यह है कि हम मानवीय गुणों को भी ईश्वरीय गुणों के रूप में धारण करें तभी हम दूसरों के कल्याण के लिए भी निमित्त बन सकेंगे और सतयुगी सृष्टि की पुन: स्थापना के कार्य को कर सकेंगे।

विशेष ईश्वरीय गुण

इस पर भी विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि करुणा अथवा दूसरों के कल्याण की भावना ही ऐसा मुख्य गुण है जिसके साथ लगकर दूसरे गुण स्वत: आना शुरू कर देते हैं। जिसमें करुणा हो, वह दानी और महादानी भी होता है और सहयोगी भी। करुणाशील ही त्यागी भी होता है और सेवा-रत भी। फिर जिसमें त्याग और सेवा-भाव हो वह व्यक्ति नष्टोमोह: भी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति के पास व्यर्थ चिन्तन, व्यर्थ कर्म करने का समय कहाँ? करुणा रूपी ईश्वरीय गुण को धारण करने वाला व्यक्ति ईर्ष्या-द्वेष और निन्दा-चुगली से बचकर रहता है। उसे न मान की इच्छा होती है, न पद या शान की; उसका मन तो स्वभाव से ही दूसरों के प्रति प्रेम और सेवा-भाव से प्लावित हो उठता है। ऐसे व्यक्ति का न किसी से वैर होता है, न किसी से शत्रुता। तब निश्चय ही वह न किसी को दु:ख देता है और न लेता है। वह तो दु:ख मिटाने और सुख देने के ईश्वरीय कार्य को ही अपना कार्य मानकर उसी में लगा रहता है। ऐसा ही व्यक्ति प्रभु-पसन्द, लोक-पसन्द और मन-पसन्द बन सकता है। अत: रहमदिल, करुणाशील अथवा महादानी-वरदानी बनना ही सही पुरुषार्थ का पथ अपनाना है। ■■■

स्नेही पाठकों को आत्मा रूपी दीपक को प्रकाशित करने के यादगार पर्व दीपावली की कोटि-कोटि शुभकामनाएँ एवं शुभ बधाई!

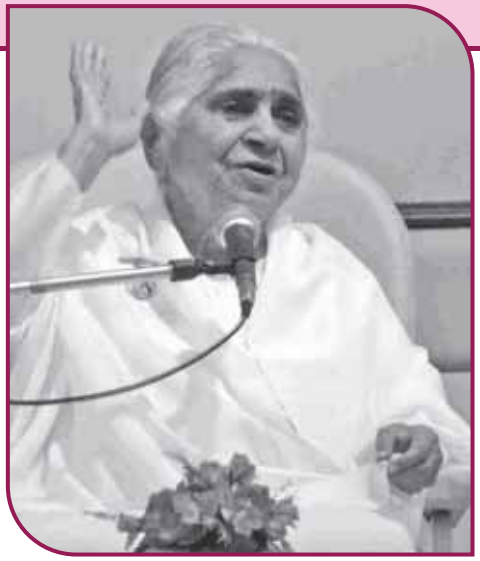

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

प्रश्न- सेवा में साथ देने वाले मुख्य चार गुण कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- बाबा के कई ऐसे चरित्र हैं, जो अचानक देख अन्दर से आता, बाबा कमाल है आपकी। जिस घड़ी बाबा की याद में बैठते हैं, तो सारी सभा में किसका भी हिलने का मन नहीं करता है। अचल-अडोल स्थिति में सब बैठे हैं। हर आत्मा देह, देह के सम्बन्ध से न्यारी हो करके चल रही है। पहले काम, क्रोध तो हैं ही खराब, लोभ और मोह भी कम नहीं हैं। अभी साक्षी होकर के देखा है, हम उनसे फ्री हैं। अपने को अच्छी तरह से देखो, क्या चाहिए? दाल-रोटी खाना, शिवबाबा के गुण गाना। शिवबाबा हमको जिन गुणों की धारण करने के लिये प्रेरणा देता है, वे तुरंत धारण करने हैं। न किसका अवगुण हम देखें, न मेरा अवगुण कोई देखे। गुणचोर बनना है। सबके गुण देख-देख करके अपने आपको शृंगारो, यह बड़ा अच्छा है। गुणों में भी देखा है धैर्य, सत्यता, नम्रता, मधुरता अपने आप सेवा में साथ दे रहे हैं। मुख्य बात है धैर्य, जल्दी नहीं करो। वरी, हरी, करी अच्छे नहीं हैं। कोई भी प्रकार की वरी (चिंता) नहीं करनी है।

प्रश्न- ड्रामा की नॉलेज के क्या-क्या फायदे हैं?

उत्तर- ड्रामा में हरेक सीन बड़ी न्यारी और प्यारी लगती है। इससे ड्रामा खेल लगता है। ड्रामा की नॉलेज न्यारा-प्यारा बना देती है। ड्रामा की नॉलेज ने व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर दिया है। यह क्यों हुआ? क्या हुआ? ड्रामा समझो। मैंने देखा है, सवेरे से रात्रि तक कराने वाले को जो कराना है, करा ही रहा है, वो बहुत होशियार है। कराने वाला करा रहा है, यह सिर्फ शब्द नहीं कहती हूँ परन्तु बड़ा वन्डर लगता है कि कैसे करा रहा है! हम करने वाले अचल-अडोल रूहानी तख्त पर साक्षी हो करके पार्ट प्ले कर रहे हैं। ऐसे नहीं, सिर्फ बैठ जाते हैं, पार्ट प्ले कर रहे हैं आर्ट के रूप में। ड्रामा की नॉलेज से बाबा को साथी बनाया है। ड्रामा की नॉलेज से अचल-अडोल रहने का नेचुरल नेचर बन जाता है, तो कोई भी बात बड़ी नहीं लगती है।

हमारी यह गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ बहुत अच्छी है। मैं 102 साल की हो गयी हूँ, अब भी स्टूडेन्ट लाइफ है माना सारी लाइफ ही स्टडी में सफल हो रही है। मैं कभी टायर्ड नहीं हुई तो रिटायर्ड क्यों होंगी! सेवाधारी के हिसाब से पहले त्यागी फिर तपस्वी फिर सेवाधारी, यह तीनों ही साथ-साथ हों। अभी-अभी त्यागी, अभी-अभी तपस्वी और सेवा – वायुमण्डल वायब्रेशन से अपने आप बाबा करा रहा है।

सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हासिल। याद से याद मिलती है क्योंकि सच्ची दिल की याद में कोई फरियाद नहीं होती है। यह याद, समय अनुसार दुश्मन को भी मित्र बनाने वाली है। सारे संसार में हमारा कोई दुश्मन नहीं है। सभी मित्र हैं। तो हरेक दिल से पूछे, मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! जब मैं आत्मा हूँ तो देह से न्यारा हूँ। तो बाबा कहता है, हे आत्मा! तू मेरी सन्तान हो परन्तु वह बचपन के दिन भुला न देना। हरेक को बहन-भाई की दृष्टि से देखो, बहन-भाई का यह सम्बन्ध भी संगमयुग पर कितने फायदे वाला है। एक-दो को देख कितनी खुशी होती है!

हम सबकी स्टूडेन्ट लाइफ है। भले कोई की उम्र 60 से ऊपर हो या कोई उम्र में छोटा हो पर वो भी स्टूडेन्ट, वो भी स्टूडेन्ट। साक्षी होकर देखते हैं, हमारा आपस में स्टूडेन्ट लाइफ में सम्बन्ध बहुत अच्छा है। बैठ के आपस में रूहरूहान करते हैं। रूहरूहान में ज्ञान की गहराई में जाते हैं। जितना गहराई में जाते हैं तो लगता है, बाबा को ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगता है। यह देह के सम्बन्ध से न्यारा बनाने वाली नॉलेज है। संगमयुग पर कोई-कोई बातें इतनी अच्छी लगती हैं जो जीवन-यात्रा में कदम-कदम पर कमाई करा रही हैं। समय की पहचान माना स्वयं की पहचान। अभिमान नहीं है, देही-अभिमानी की स्थिति से सहजयोगी हैं, कैसी अच्छी लाइफ है!

प्रश्न- दादी जी, आपको सारी दुनिया में सेवा करने का भाग्य मिला है, उसके कुछ अनुभव सुनाइये?

उत्तर- फुलस्टॉप देने की स्थिति वा विधि बहुत अच्छी है, क्वेश्चन मार्क कभी आता ही नहीं है। बाबा ने अति मीठा, अति प्यारा बना दिया है। जैसे शिव भोला भगवान है, ऐसे हम बच्चे भी भोले हैं, भूल नहीं करते हैं। मुझे त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी का रूप अच्छा लगता है। सफेद कपड़ा, खीसा खाली, हम हैं सारे विश्व के माली, यह बाबा ने अनुभव कराया है। सफेद कपड़ा बहुत अच्छा है और कभी मेरे हाथ में पर्स नहीं देखा होगा। कुर्ते में जेब है पर मुझे जेब को हाथ लगाना भी नहीं आता है, क्या करेंगे, सफेद कपड़ा, जेब खाली है। पर जब जापान गई थी तो वहाँ एक बहुत बड़ी सभा थी जिसमें एक बहुत बड़ा विद्वान था, वो लेक्चर कर रहा था। उसके बाद मुझे बोलना था। वह भी वन्डरफुल अनुभव था। हम कहीं पर भी जायेंगे तो सेवार्थ, हमको न शॉपिंग करनी होती है, न ही कोई साइडसीन। सारी लाइफ में, सारी दुनिया में सेवा करने का भाग्य मिला है परन्तु मैं नहीं समझती हूँ कि कभी कहीं किसी शापिंग सेन्टर पर पांव रखा हो। मुझे पता ही नहीं है। क्या चाहिए, क्या करेंगी? बाबा ने स्पेशल ट्रेनिंग दी है। कोई चिंता नहीं, कोई चिंतन नहीं। कोई स्वार्थ नहीं है, नष्टोमोहा, अनासक्त वृत्ति की जीवन कितनी अच्छी और न्यारी, बाबा की प्यारी है। किसी को कुछ और नहीं दे सकते हैं पर रूहानी प्यार तो दे सकते हैं। दृष्टि द्वारा, मुस्कराते हुए चेहरे से मिलन मना सकते हैं।

प्रश्न- वर्तमान समय के हिसाब से पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर- कभी निगेटिव ख्याल न आवे। पॉजीटिव इतना पॉवरफुल, जो निगेटिव को भी पॉजीटिव बना देवे, इतनी अन्दर लगन की अग्नि हो। अगर हलुआ बनाना हो तो क्या करेंगे? बिना अग्नि के सिर्फ घुमाते रहें तो नहीं होगा। समय ऐसा है, शान्ति की शक्ति के वायब्रेशन यहाँ से सारे विश्व भर में फैलते जा रहे हैं। अभी हम बाबा की फोटोकॉपी बनें, सेम जैसे बाबा। अभी यह काम आप कर सकते हो। कभी भी न इच्छा, न ममता हो। क्या होगा, कैसे होगा, यह सोच क्या है? ममता होगी तो सोचेंगे कि यह छूट न जावे, यह मेरे पास रहे। कोई भी बात सामने आवे तो साधारण संकल्प भी न हों, श्रेष्ठ संकल्प हों। साधारण से टाइम व्यर्थ जा सकता है इसलिए संकल्प भी शान्त। संकल्प में शान्ति की शक्ति हो। कोई भी बात जब बुद्धि में स्पष्ट है तो दिल में सच्चाई-सफाई ऑटोमेटिक काम करती रहती है। करना नहीं पड़ता है। मन शान्ति की शक्ति पैदा करता है तो बुद्धि नेचुरल शान्त और स्थिर है। स्थिर होने से कभी भी डोलायमान, चलायमान नहीं होती है। नहीं तो यह भी एक बीमारी है। संकल्प की क्वालिटी फर्स्टक्लास हो तो सफलता हुई पड़ी है। बुद्धि से अगर अचल हैं तो वन्डरफुल कार्य होंगे। कोई बात वा कुछ संकल्प आये और गये, पर अभी तक हमारी बुद्धि क्यों चल रही है? जो बात यहाँ आई और गई अर्थात् पास्ट इज़ पास्ट। अभी बाकी थोड़ा समय है कलियुग को जाने में। प्रकृति हलचल करेगी। हमें तो बाबा के साथ ऊपर जाना है। भले बाबा वहाँ बैठें, हम तो फिर से यहाँ आयेंगे परन्तु ऊपर जाने के लिए न सिर्फ चढ़ती कला हो बल्कि उड़ती कला हो। यह चेकिंग अपने चार्ट की रखनी जरूरी है।

प्रश्न- सतो और सतोप्रधान में क्या अन्तर है?

उत्तर- सतो और सतोप्रधान में बड़ा अन्तर है। थोड़ी भी कोई कमी मेरी है या किसकी भी है, वो देखी, सुनी वा सोची तो ऐसे करते-करते कभी-कभी सतो से रजो में आ जाते हैं। सतोप्रधान जो होंगे, बुद्धि को हिलने नहीं देंगे। अन्दर इतनी शक्ति है जो सहजयोग, राजयोग, कर्मयोग नेचुरल योग है। पुरुषार्थ नहीं है। योग माना ही क्या? कनेक्शन। कनेक्शन से लाइट आती है, माइट मिल जाती है। जिस घड़ी बाबा से कनेक्शन है तो लाइट-लाइट है। तो सतोप्रधान स्थिति औरों को भी खींचती है। यहाँ भी कोई-कोई आत्मायें हैं वो पहले एक समय पुरुषार्थी थी, अभी दूसरों के लिए पुरुषार्थ में एक मिसाल बन गयी हैं। ऐसे है ना, इसका नशा नहीं है परन्तु जो बात सही है वो कहने में कोई हर्जा नहीं है। जो सतोप्रधान होगा, वो जिसके संग में आया उसको वो रंग चढ़ गया। सतो वाला खुद कभी रजो-तमो में आ सकता है लेकिन सतोप्रधान के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। कोई-कोई के स्वप्न ऐसे होते हैं, कहेंगे, बहुत अच्छा था, वन्डर है, परन्तु ऐसी स्थिति बनाने के लिए तो मेहनत करनी पड़ेगी ना। ■■■

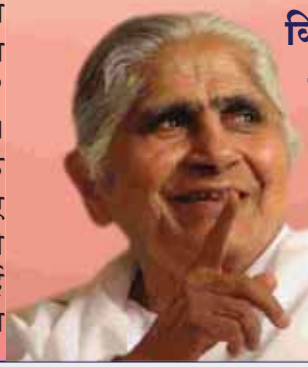

किसी को कुछ और नहीं दे सकते हैं पर रूहानी प्यार तो दे सकते हैं।

दृष्टि द्वारा, मुस्कराते हुए चेहरे से मिलन मना सकते हैं।

बुरा मत मानो

■■■ ब्रह्माकुमारी ललिता, विकासपुरी, नई दिल्ली

हममें से बहुत-से लोग हैं जो छोटी-छोटी बातों पर बहुत जल्दी नाराज हो जाते हैं बिल्कुल छुईमुई के पौधे की तरह। कभी देखा है छुईमुई का पौधा? उसको बस छू भर दो और वह सिकुड़ जाता है लेकिन उसकी यह विशेषता है कि थोड़ी देर में खुदबखुद पहले जैसी स्थिति में आ जाता है। लेकिन, कुछ लोग इस पौधे से ठीक विपरीत, रूठ तो पल भर में जाते हैं लेकिन मानते बहुत देर से हैं। निस्संदेह ऐसे लोग बहुत भावुक होते हैं, दिल के बहुत अच्छे होते हैं। ये लोग खुद भी ज्यादातर दूसरों की भावनाओं का ख्याल रखते हैं। शायद इसलिए वे दूसरों से भी ऐसी ही अपेक्षा भी रखते हैं। इनका मोम जैसा दिल जरा-सा सेक भी बर्दाश्त नहीं कर पाता। फट पिघल कर फैल जाता है।

हमें हमेशा तारीफ करने वाले लोग नहीं मिलेंगे और यह संभव भी नहीं कि एक व्यक्ति केवल तारीफ के लायक ही काम करे। कोई कितना भी फरफेक्ट क्यों न हो, गलती तो हो ही जाती है। हर कोई हमेशा सामने वाले के मन मुताबिक काम कर भी नहीं सकता। निंदा तो मिलती ही है। कोई हमारी कमी निकाले तो बुरा लगना स्वाभाविक है लेकिन रूठ कर बैठ जाना, किसी से बात न करना, सामने वाले को देख मुँह बना-बना कर अपनी नाराजगी दर्शाना तो कोई बुद्धिमत्ता नहीं।

पहला और सबसे आसान तरीका है, नजरअंदाज करना। किसी ने कुछ भी कहा, उसे कान के रास्ते से दिल तक मत लेकर जाओ। एक कान से सुना, दूसरे से निकालो। यह आसान नहीं है पर मुश्किल भी नहीं है। अपना काम सलीके से, अपनी योग्यता अनुसार मन से करो और मत सोचो कि किसको अच्छा लगेगा और किसको बुरा। अगर कुछ को वो जंचेगा तो कुछ उसमें से मीन-मेख भी जरूर निकालेंगे। जाने दो। लेकिन अगर कोई आपका अपना, आपका शुभचिंतक, आपका ध्यान किसी कमी की ओर दिला रहा है तो जरूर उसे महत्त्व दें, सुधार की कोशिश करें। परिणाम सुखद आएगा। एक संत ने तो यहाँ तक कहा है कि अपनी कमी को निकालने वाले को सदैव साथ रखिए। वह आपको सोने से कुंदन बना देगा यदि आपने सुधार की प्रक्रिया को जारी रखा तो।

दूसरा तरीका कठिन है लेकिन बहुत कारगर है। किसी ने आपके काम में कमी निकाली तो मुस्करा कर उसको शुक्रिया कहो कि आपने मेरे काम के बारे में इतनी गहराई से सोचा और मुझे और बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। उसकी आलोचना का दिल से स्वागत करें। यकीन मानिए, आपके साथ उसके बहुत ही आदर्श संबंध स्थापित हो जाएंगे। आपकी प्रतिभा में भी निखार आएगा। लेकिन सावधान! अपने विवेक से आपको ऐसे लोगों का चुनाव करना होगा। केवल सुपात्र ही आपकी इस कोमलता का हकदार है। हर कोई नहीं। ध्यान रहे, लोग इसे आपकी कमजोरी समझ आपका नाजायज फायदा न उठाने पाएँ।

कभी-कभी कोई बहुत ही दिल कचोटने वाली बात कह देता है। ऐसे में हम चाह कर भी खुद पर नियंत्रण नहीं रख पाते। बहुत ही बुरा लग जाता है। ज्यादा बुरा तब लगता है जब हमें लगता है कि हमारी तो गलती ही नहीं थी। अगर वह व्यक्ति आपको मानता है तो बहुत ही विनम्रता और अपनेपन से अपना पक्ष रखें। उसका पक्ष भी जरूर सुनें। क्या पता आपकी ही गलती निकल आये। कई बार, किसी के कहने के बाद महसूस होता है कि कहीं न कहीं हम गलत हैं। कोई मना रहा है, बात करना चाह रहा है तो खुद भी थोड़ा झुक जाएँ। चलता है। कभी खट्टा, कभी मीठा।

यदि बार-बार रूठेंगे और मानेंगे नहीं तो कुछ समय बाद कोई मनाएगा भी नहीं। आप पर तमगा लगा दिया जाएगा, अरे इनका तो यही काम है, कुछ मत कहना, बुरा मान जाएंगे। लोग आपसे बचेंगे। खुल कर बात करने में हिचकिचाएंगे। ऐसे संबंधों का क्या लाभ? संबंधों में यदि

शेष भ ाग पृष्ठ 27 पर

पत्र सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका वस्तुत: ज्ञान का भण्डार है। जुलाई, 2018 के सम्पादकीय में सूक्ति के रूप में सुखी जीवन की अनेक बातें कही गई हैं जैसे कि भगवान कहते हैं, विधि को बदलकर देखो, सिद्धि मिलेगी, प्यार मिलेगा, चैन मिलेगा। ज्ञान के साथ शक्ति भी चाहिए, अनुभूति भी चाहिए। एक होता है आत्मा को जानना, एक होता है आत्मा हो जाना। मानना है भक्ति, स्वरूप हो जाना है अध्यात्म। सत्य में सुख है, असत्य में दु:ख। हम असत्य में जी रहे हैं इसलिए बार-बार खुशी खो जाती है। प्रकृति और पुरुष (आत्मा) दोनों बहुत महान हैं। दोनों के सहयोग से श्रेष्ठ जीवन बनता है परन्तु जब पुरुष, प्रकृति में आसक्त हो जाता है तो जीवन दलदल हो जाता है। घर-परिवार, समाज में रहते हुए व्यक्ति अनासक्त रहे, इसके लिए चाहिए ज्ञान सूर्य शिव बाबा की योगाग्नि।

ब्रह्माकुमार तुलसी भाई जी के दीदी मनमोहिनी जी के बारे में लेख से दीदी के बारे में जानकारी मिली और बहुत सीखने को भी मिला। ब्रह्माकुमारी गीता बहन का लेख 'वाह-वाही की वासना' एक महत्वपूर्ण लेख है। 'गुनाहों की स्वीकारोक्ति' से सीख मिली कि हम अधिकाधिक याद में रह अपने विकारों को समूल समाप्त कर दें। उपर्युक्त के अतिरिक्त पत्रिका में सभी कुछ बाबामय और उनकी शक्ति से सम्पन्न तो है। पत्रिका 54वें वर्ष में प्रवेश कर गई है, बधाई स्वीकारें। यह आत्मा की पत्रिका है, जिसका प्रत्येक वाक्य आत्मा को अपरिहार्य रूप से छूता ही है।

– डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की (उत्तराखण्ड)

अगस्त, 2018 अंक में ''क्या गुस्सा सहज और स्वाभाविक है?'' लेख बहुत ही अच्छा लिखा गया है। गुस्सा हमेशा ही नुकसानदायक है। लेखिका ने गुस्से के कारणों का उल्लेख तो किया ही है, साथ में समाधान भी अच्छे दिए हैं। इसके लिए वे बधाई की पात्र हैं। हम सब प्रेमपूर्वक रहेंगे तो समाज और देश दोनों का भला होगा।

-- ब्रह्माकुमार रमेश मुंजाल, कालका (हरियाणा)

अगस्त, 2018 की ज्ञानामृत का हर लेख दिल को भा गया। काफी देर सोचता रहा कि विशेष किस लेख की महिमा करूँ! सभी लेख बहुत ही सुंदर और आत्मा के पुरुषार्थ की गति बढ़ाने के निमित्त हैं। कई लेख छोटे हैं परन्तु अर्थ विशेष भरा होता है। हर लेख अमूल्य है। अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं।

-- ब्रह्माकुमार अशोक, ससाणे नगर, हडपसर (पुणे)

अगस्त, 2018 अंक की विशेषताएँ –

- पूर्व मुख्य संचालिका दादी प्रकाशमणि जी के व्यक्तित्व पर लेख से हम सभी को आलोकित करना।
- क्रोध से बचाव के उपाय।
- इन्द्रियों की गुलामी के दुष्परिणामों से परिचय कराना।
- महिला-सशक्तिकरण हेतु आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की महती आवश्यकता।
- सच्चे मित्रों के गुणों को आत्मसात करने की आवश्यकता।
- रक्षा-बन्धन जैसे महान पावन पर्व पर सराहनीय संपादन।

उपरोक्त विशेषताओं से परिपूर्ण यह अंक वास्तव में अनुकरणीय एवम् प्रशंसनीय है जिससे हम सभी की आत्माएँ आलोकित होकर, अन्य को भी आलोकित होने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

-- डॉ. रामस्वरूप गुप्त, पूर्व प्रधानाचार्य, भारतीय इण्टर कॉलेज, मैगलगंज (लखीमपुर-खीरी)

आवश्यकता

ग्लोबल अस्पताल मा.आबू में ट्रान्सपोर्ट विभाग में सेवा के लिए एक भाई की आवश्यकता है जिसे ट्रान्सपोर्ट वाहनों की तकनीकी जानकारी, रख रखाव व यातायात कार्य प्रणाली का अच्छा अनुभव हो। सुरक्षा सेवाओं के जे.सी.ओ. रैंक के मोटर ट्रान्सपोर्ट कोर्स किये हुए, अनुभवी बी.के. भाई को प्राथमिकता दी जायेगी।

संपर्क करें - 9413375360, ई-मेल - ghrchps@gmail.com

वैश्विक शिखर सम् मेलन

विज्ञान, अध्यात्म और पर्यावरण

सुखमय संसार के नवनिर्माण में मानव की भूमिका

आबू रोड (राज.) : वैश्विक सम्मेलन-कम-एक्सपो में ''विज्ञान, अध्यात्म और पर्यावरण'' विषय पर आबू रोड में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा, माननीय मुख्य न्यायाधीश, श्री राजनाथ सिंह, माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री भारत सरकार, राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़ एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों और 140 देशों से पधारे 10,000 से अधिक प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी तथा भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शिखर सम्मेलन की सफलता के लिए अपना संदेश भेजा गया।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान और दिल्ली के आर्ट परिधि ग्रुप द्वारा पेंटिंग कम्पीटिशन कम वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस कम्पीटिशन में देशभर से आये कलाकारों ने भाग लिया। बाली इंडोनेशिया से पधारे कलाकारों ने भरत नाट्यम पर जोरदार प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। देशभर से पधारे पर्यावरणविदों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया।

संकुचित हृदय के साथ व्यक्ति कभी महान कार्य नहीं कर सकता। -- गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह

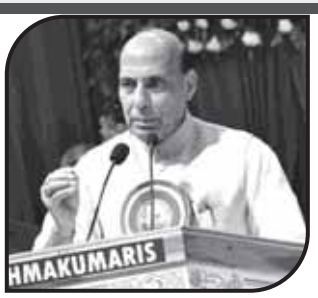

माननीय राजनाथ सिंह जी ने अपने सम्बोधन में मन, अध्यात्म, विज्ञान और भारतीय संस्कृति के विषय पर कहा कि मन का दायरा सीधे तौर पर खुशी के स्तर और आनंद के स्तरके साथ आनुपातिक है। संकुचित हृदय के साथ व्यक्ति कभी महान कार्य नहीं कर सकता। विशाल हृदय के साथ जीवन जीने में आनंद आता है। मात्र प्रार्थनाएं करने से व्यक्ति आध्यात्मिक नहीं बन सकता है। अपने जीवन में आध्यत्मिक स्तर को बढ़ाने के वह निरंतर प्रयास के साथ विशेष कार्य करता रहता है। मंदिरों या मस्जिदों में प्रार्थनाएं अदा करने के साथ-साथ अपने हृदय को भी विशाल करने की जरूरत है। जिसका हृदय जितना विशाल होगा वह उतना अधिक आध्यात्मिक होगा। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सदा हृदय को विशाल कैसे करें, यह ज्ञान सभी को प्रदान किया जाता है। मुख्य प्रशासिका दादी जानकी और दादी रतन मोहिनी जी उसी विशाल हृदय के प्रतीक हैं तभी वे इतने बड़े परिवार की देखभाल बड़ी सुगमता के साथ कर रहीं हैं। इन्होंने इतनी सारी बहनों के सहयोग के साथ विश्व के 146 देशों में इस संगठन का विस्तार किया है। जो कार्य कोई सरकार करने में असमर्थ है, ब्रह्माकुमारीज़ उसे कर रहे हैं।

गृह मंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने भी छोटी-छोटी बातों पर चिंता व्यक्त की है। संगठन साफ-सफाई, जैविक खेती, सौर ऊर्जा, महिला सशक्तिकरण पर काम कर रहा है। संगठन न केवल मनुष्यों के बारे में लेकिन मानवता और जीवित प्राणियों के लिए भी जागृति का कार्य कर रहा है। 80वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर संगठन ने 80 लाख पेड़ लगाए, जो वर्तमान में पर्यावरण को बचाने के लिए देश और विश्व को संदेश है।

गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हमारे देश के संतों ने शून्य और आध्यात्मिकता की खोज की थी। विज्ञान, अध्यात्म और धर्म एक-दूसरे के विपरीत हैं, यह पश्चिमी देशों का विश्वास है। पर भारत का मानना है कि विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक हैं और ये एक ही हैं। चरक, जीवक, सुश्रुत, आर्यभट्ट आदि महान संतों के साथ ही महान वैज्ञानिक भी थे।

विज्ञान, आध्यात्मिकता की सहायता से ही बढ़ सकता है।

--न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा

''मैं यहाँ शांति की भावना महसूस करता हूँ। हम सार्वभौमिक शांति चाहते हैं और आप में से हरेक शांति का महान राजदूत है। विज्ञान जानकारी देता है कि ब्रह्मांड में क्या हो रहा है। अगर हम एक साफ, स्पष्ट, प्रदूषण रहित ब्रह्मांड चाहते हैं तो व्यवहारिक नैतिकता सबसे ज्यादा मायने रखती है। यदि दुनिया में हर कोई विश्वास के साथ व्यवहारिक नैतिकता का आचरण करता है तो वहीं से पर्यावरण में नैतिकता का प्रसार होगा। 80 लाख पौधे संगठन द्वारा लगाए गए। अगर आप नैतिकता के बीज बोने का कार्य कर रहे हैं तो यही आध्यात्मिक-नैतिक शिक्षा है। एक बार हमने स्वयं शांति को पा लिया तो दुनिया में शांति होगी। हम दुनिया में शांति चाहते हैं, दुनिया में अच्छा माहौल चाहते हैं। वैज्ञानिक तथ्ययुक्त आध्यात्मिकता द्वारा जो विश्व शांति की ओर बढ़ रहा है, यह सराहनीय है। ब्रह्माकुमारीज़ का दुनिया को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास अद्भुत है। हम सब इस दुनिया और ब्रह्मांड से संबंध रखते हैं, इसलिए हम निर्माण के लिए भागीदारी दें, न कि विनाश के लिए। आप एक शांतिपूर्ण विश्व बनाने में रचनात्मक योगदान दे रहे हैं।''

''इच्छा जरूरत बन जाती है और जरूरत आवश्यकता हो जाती है। मान लो किसी की सोच में है कि वह पीएच.डी. होना चाहता है। जब यह कहा जाता है, ''मैं यह चाहता हूँ'' यह कहने के साथ ही कि मैं यह चाहता हूँ, मन की शांति चली गई और आध्यात्मिकता की भावना को भी मैंने खो दिया। विज्ञान मन की चेतना, आत्मा और दिल के प्रति पूरी तरह से प्रासंगिक है। विज्ञान और अध्यात्म एक दार्शनिक दृष्टिकोण के साथ यात्रा करते हैं। जब व्यक्ति स्वयं को बदल कर, परमेश्वर के साथ अपने सच्चे आत्म स्वरूप में स्थित करता है तब वह चमत्कार कर सकता है। विज्ञान, आध्यात्मिकता की सहायता से बढ़ सकता है। भगवान या सर्वशक्तिमान हम सभी से प्यार करता है, हमारी देख-भाल करता है। भगवान कभी किसी को डराता नहीं है। आप अपना अहंकार परमात्मा को समर्पित करने के बाद ही भगवान से जुड़ सकते हैं। इस संगठन की पवित्रता हर किसी को अध्यात्म में आगे बढ़ने में मदद कर रही है।''

मांसाहारी खुराक भी पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है।

-- मारला मैपल्स

अमेरिका से पधारी मारला मैपल्स, टेलीविजन व्यक्तित्व और अभिनेत्री ने कहा कि अमेरिका को इन दिनों कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन चारों तरफ से विशेष लोग और दोस्त हमारे जीवन को खुशी से भर देते हैं। यह संभव हुआ है जब से हमने कुंडलिनी योग, ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग और दिनचर्या में शाकाहारी भोजन इत्यादि को शामिल किया है। वैश्विक सम्मेलन को संबोधित करते हुए मारला ने कहा कि हम सब प्रगति कर सकते हैं, आगे बढ़ सकते हैं, हम सब एक साथ रहें। मुझे यहां आने का अवसर देने के लिए परमात्मा का बहुत-बहुत धन्यवाद। मारला ने कहा कि वह कई प्रकार के भोजन को ग्रहण कर चुकी हैं लेकिन शाकाहारी भोजन सबसे अच्छा है। माँसाहारी खुराक भी पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है।

पद्मश्री कार्तिकेय साराभाई, संस्थापक और निदेशक पर्यावरण शिक्षा केंद्र ने कहा कि हमें अपनी पुरानी परंपराओं के साथ नई प्रौद्योगिकियों का एक साथ क्रम में, पर्यावरण को बचाने के लिए अनुसरण करने की आवश्यकता है। मनुष्य को लगता है कि प्रकृति बेकार चीजें समा सकती है। यह विचारधारा सही नहीं है। महात्मा गांधी ने कहा कि हमें एक ट्रस्टी के रूप में प्रकृति का उपयोग करने की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक ब्रह्मा बाबा को याद करते हुए उन्होंने कहा कि कई दशक पहले, ब्रह्मा बाबा ने अपने दैवी साक्षात्कार में देखा था कि कैसे परमाणु बमों द्वारा प्रकृति का नाश और मानव संघर्ष की वजह से तबाही हो रही है। हम अब वह सब व्यवहारिक रूप से देख रहे हैं। इसलिए पर्यावरण को बचाने के लिए हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितने की आवश्यकता है।

राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी, ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका ने कहा कि हम सब भगवान के बच्चे हैं और इस तरह हम आपस में भाई-भाई हैं। इसलिए हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिए और एक दूसरे को खुश रखना चाहिए। हमें एक-दूसरे से बदला लेने की या ईर्ष्या की भावना नहीं रखनी चाहिए। भारत में जब स्वर्ग था तो चारों ओर खुशी, शांति और आनंद था। वहां अधर्म का कोई निशान नहीं था। हम फिर से अपने दिव्य कर्मों के द्वारा गोल्डन दुनिया बना सकते हैं।

श्री थावर चंद गहलोत, माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री ने कहा कि संगठन विश्व शांति के संकल्प को धरातल पर उतारने का, वसुधैव कुटुम्बकम्, जियो और जीने दो और आम जनता को धर्म पथ पर प्रेरित करने का प्रयास कर रही है। वर्तमान दुनिया में चिंता और समस्याओं में वृद्धि का कारण आध्यात्मिकता से हमारी दूरी है। आध्यात्मिकता अपनाने के बिना, वैश्विक शांति की भावना और सर्वे संतु निरामया: की धारणा को फलीभूत नहीं किया जा सकता है।

डॉ सिन्धुताई सपकाल, अनाथों की माता, पुणे (जो बंगलौर में 1,050 बच्चों की देख-भाल करने में सेवारत हैं) ने कहा कि हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमेशा सीखने की जरूरत है। हमें अपने दिल की सुनने की जरूरत है। कहा जाता है, कफन में जेब नहीं होती है, कोई भी कभी भी मौत की सिफारिश नहीं करता है। हमें त्याग करने की भावना को जानने की जरूरत है।

रीता बहुगुणा जोशी, उ.प्र. की महिला, परिवार व बाल कल्याण एवं टूरिज्म मंत्री ने कहा कि लीडर वही होता है जो अपनी विधा में कीर्तिमान स्थापित करे। ब्रह्मा बाबा ने ऐसे समय में बेटियों को आगे बढ़ाया जब भारत की लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी। ब्रह्मा बाबा द्वारा लगाया गया एक छोटा-सा पौधा आज वटवृक्ष का रूप ले चुका है।

हमने दुनिया को अनेक धर्म और फिलॉसफी दी हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें एकता का सिद्धांत विश्वभर में दे रही हैं। बहनों द्वारा जो शांति, पवित्रता, भाईचारा, प्रेम का संदेश दिया जा रहा है यदि इनमें से एक बात ही हम ग्रहण कर लें तो जीवन सुधर जाएगा। ब्रह्माकुमारी बहनें विश्वभर में शांति का संदेश फैला रही हैं। यहां से जुड़े लोगों को ईश्वर ने दूत बनाकर भेजा है। यहां हर धर्म, जाति और संप्रदाय के लोग हैं, ये हमारे देश की महानता और आध्यात्म का ही कमाल है। अपनी चेतना और वजूद को समझना ही अध्यात्म है। अध्यात्म का अर्थ वैराग्य लेना नहीं है। आध्यात्मिक शक्ति का ही कमाल है जो स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में अपने उद्बोधन से विश्वभर में आध्यात्मिक संदेश दिया था।

गंदे नालों और सीवरेज का पानी गंगा में छोड़ने से हालत ये हो गई है कि आज इसमें स्नान करना मुश्किल है। जिस दिन हम मान लेंगे कि जल ही जीवन है तो प्रदूषण नहीं करेंगे। प्रदूषण रोकने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। प्रधानमंत्री संदेश दे रहे हैं कि स्वच्छता ही सेवा है, जिस दिन हम इसे धारण कर लेंगे तो गंदगी नहीं रहेगी।

सुधीर मुंगातीवर, महाराष्ट्र के वित्त, निर्माण और वन मंत्री ने कहा कि आज इस देश की लीडरशिप में इस सोच को भरना होगा कि हम गलत कामों से, गलत कृति से, गलत विचारों से देश को आगे नहीं चलाएंगे। हमारा देश उस नेतृत्व में चलेगा कि विज्ञान कितना भी आगे बढ़े, रामराज्य की सोच कायम रहेगी। देश आर्थिक दृष्टि से कितना भी संपन्न रहे लेकिन हमारा देश श्रीकृष्ण, श्रीराम, बुद्ध, महावीर का है अत: इस देश का अध्यात्म नहीं बदलेगा। अध्यात्म हमें सिखाता है कि ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।

रोजाना एक व्यक्ति 21,999 बार सांस लेता है। यदि मार्केट रेट के हिसाब से लगाएं तो 2100 रुपए की ऑक्सीजन पेड़ हमें रोज देते हैं। इस हिसाब से 80 वर्ष में एक पेड़ से हमें 6,13,20000 रुपए की प्राणवायु मिलती है। हमने कहा, वन से धन तक और जंगल से मंगल तक जाना है। इसे लेकर ही हमने 'पेड़ लगाओ' अभियान शुरू किया है। इसमें लक्ष्य से ज्यादा पौधरोपण किया। वृक्ष बचाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। पर्यावरण बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। आज संयुक्त राष्ट्र संघ भी जीडीपी की जगह प्रति व्यक्ति की खुशी पर बात करता है।

रोलांडा वाट, यू.एस.ए. से पधारीं सीनियर जर्नलिस्ट व टीवी एंकर ने कहा कि मैं कर्मों की पारदर्शिता पर विश्वास करती हूं। हम सभी में प्रेम और शांति होना चाहिए। ईश्वर के बिना जीवन अंधकारमय हो जाता है। यहां एक साथ सात हजार लोग देखकर अभिभूत हूं। विदेश में तो एक साथ 300 लोग भी इकट्ठे नहीं होते हैं। क्योंकि यहां गॉड से लव करने की शिक्षा दी जा रही है। साथ ही वन गॉड, वन फैमिली का संदेश दिया जा रहा है। मैं यहां ईश्वरीय शक्ति का अनुभव कर रही हूं।

पद्मश्री प्रो. रामाकृष्णा वी होसुर, मुंबई से पधारे टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के डिप्टी डायरेक्टर ने कहा कि ईमानदारी, सत्यता, दृढ़ता, नम्रता वैज्ञानिक पद्धति से विकसित नहीं होंगी, इनके लिए अध्यात्म जरूरी है। अंत: चेतना में झांकने से ही परमात्मा की अनुभूति होगी। भगवत गीता के ज्ञान को आत्मसात करने की जरूरत है। परमात्मा से रिश्ता जोड़ने के लिए गीता ज्ञान के अनुसार स्वयं का जीवन मर्यादा पुरुषोत्तम बनाना होगा। आध्यात्मिकता से ही सुख-शांति, पवित्रता, नि:स्वार्थ प्यार और एकता आ सकती है।

एम. कृष्णा रेड्डी, कर्नाटक के विधानसभा उपाध्यक्ष ने कहा कि इस संस्था की पहचान शांति और पवित्रता से है। 103 वर्षीय दादी जानकी हमारे सामने आदर्श हैं। समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। सामाजिक, प्राकृतिक, भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय यहां सुचारू रूप से देखने को मिलता है। यहां से विश्व में, अध्यात्म और मूल्यों से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

अनीता देवकोटा, नेपाल से पधारीं विधायक ने कहा कि यहां से वसुधैव कुटुम्बकम् और सकारात्मक सोच का संदेश दिया जा रहा है। भौतिक विज्ञान से जीवन सार्थक नहीं होगा। इसके लिए अध्यात्म-विज्ञान को अपनाना होगा।

सुषमा सेठ, बॉलीवुड व टीवी एक्ट्रेस ने कहा कि यहां आकर सभी का व्यवहार देखकर आनंद आया। संस्था ने विश्वभर में बदलाव लाया है। आज विश्वभर के लोग हमारा अध्यात्म और योग सीख रहे हैं।

प्रवीण कुमार मेहता, डिफेंस मंत्रालय डीआरडीओ के महानिदेशक वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि यहां आकर पॉजीटिव और स्प्रीचुअलिटी के बाइब्रेशन महसूस किए। साथ ही जाना कि कैसे हम आत्मा को आत्मा से जोड़ सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था फील्ड में कार्य कर रही है। मुझे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के साथ कार्य करने का मौका मिला। उनमें साइंस और स्प्रीचुअलिटी का समन्वय था। ये संस्थान आत्मा के उत्थान और स्वर्णिम दुनिया लाने का कार्य कर रहा है।

वीरेंद्र कंवर, हिमाचल प्रदेश के ग्राम विकास व पंचायती राज मंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज जीवन जीने की कला सिखा रही है। भारत की संस्कृति व मूल्यों को फिर से विश्वभर में फैला रही है। पश्चिम की सोच और हमारी सोच में भारी अंतर है। पश्चिम के लोग विश्व को व्यापार की दृष्टि से देखते हैं। हमारी संस्कृति सिखाती है कि विश्व एक परिवार है। विज्ञान को अध्यात्म से जोड़कर इसके दुष्परिणाम कम कर सकते हैं। संस्था द्वारा राष्ट्र के जीवन मूल्य को फिर से दुनिया भर में पहुंचाया जा रहा है। आज इस मंच से मैं प्रण लेकर जा रहा हूं कि संस्था द्वारा किए जा रहे समाज परिवर्तन के कार्य से जुड़ा रहूंगा।

जल योद्धा अय्यपा मसाजी, बैंगलूरू जल साक्षरता नींव के संस्थापक ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन पर्यावरण व जल संरक्षण को लेकर संवेदनशील है। घटता भू-गर्भीय जलस्तर चिंता का विषय है। जल संरक्षण को लेकर व्यापक स्तर पर जन जागरुकता की जरूरत है।

पद्मश्री डॉ. प्रकाश आम्टे, जाने-माने पर्यावरणविद्, समाजसेवी ने कहा कि प्रेम-स्नेह में इतनी शक्ति है कि खूंखार जंगली जानवरों को अपना दोस्त बना सकते हैं। जिन जानवरों को हम खतरनाक कहते हैं वो मेरे घर के

सदस्य हैं। कॉलेज में एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई के दौरान मन में आया कि हमें समाज के सबसे पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए कुछ करना है। पढ़ाई के बाद संकल्प लिया और आदिवासियों की सेवा के लिए निकल पड़े। इसमें हमारी धर्मपत्नी मंदाकिनी आम्टे ने पूरा साथ दिया। सुविधा संपन्न जीवनशैली छोड़कर तमाम परेशानियों का सामना करते हुए हम पति-पत्नी लोगों की सेवा में जुटे रहे। मन में एक ही संकल्प था कि हमारे इन भाई-बहनों को भी समाज की मुख्य धारा से जोडऩा है। लोगों से ऐसे जुड़े कि कब इनके बीच 45 साल गुजर गए पता ही नहीं चला।

पद्मश्री डॉ. आम्टे ने कहा कि आदिवासियों की सेवा में मेरे बेटे-बहू भी पूरा साथ दे रहे हैं। मुझे गर्व होता है कि हमारे परिवार की चौथी पीढ़ी लोगों की सेवा में पूरी तन्मयता के साथ लगी है (डॉ. आम्टे ने आनंदवन की स्थापना की है जहां जंगली जानवरों, पशु-पक्षियों को पाला-पोसा जाता है। साथ ही कुष्ठ रोगियों के लिए वर्षों से काम कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों के लिए आपको वर्ष 2002 में पद्मश्री अवार्ड और 2014 में मदर टेरेसा अवार्ड से सम्मानित किया गया। आपके जीवन पर फिल्म भी बनाई गई है)

नई दिल्ली से पधारे **श्री 108 महामंडलेश्वर स्वामी हरिओम गिरी महाराज** ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने ब्रह्माकुमारी बहनों को तैयार कर विश्व शांति के पावन कार्य में लगाया। बाबा ने ध्यान, योग और ओम शांति के महामंत्र से जो ये पावन धाम बनाया है इसे देखकर मन को बहुत प्रसन्नता हुई। यहां से पूरे विश्व में शांति की किरणें फैल रही हैं। ये ब्रह्माकुमारी बहनें पूरे संसार को शांति प्रदान कर सकती हैं। यहां से जो ऊर्जा उत्पन्न होगी वह पूरे विश्व में शांति फैलाएगी।

इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च काउंसिल के सीनियर मेंबर **सुदेश चंदेल** ने कहा कि पूरी दुनिया के लोग अध्यात्म और योग को समझने के लिए भारत की ओर रुख करते हैं। ये हमारे भारत की महानता ही है। अध्यात्म हमारी विरासत है। पाश्चात्य दार्शनिकों ने भी अध्यात्म को समझने के लिए भारत की ओर रुख किया। आज ब्रह्माकुमारी बहनें न केवल भारत बल्कि विश्व के 140 देशों में, भारतीय पुरातन संस्कृति व आध्यात्मिकता का संदेश पूरी निष्ठा के साथ दे रही हैं। ये बहनें भारत की वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को पूरे विश्व में साकार करने के महान कार्य में लगी हैं। संस्था ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में जबरदस्त क्रांति लाई है।

नाइजीरिया से पधारीं **सिस्टर आरा रोला** ने कहा कि मैं परमात्मा के बुलावे पर ही यहां आई हूं। आत्मा को कोई देश नहीं होता, न ही वह किसी सीमा में बंधती है। मुझे यहां आकर ऐसा लगा जैसे मैं अपने ही घर में आ गई। पहली बार भारत आईं सिस्टर आरा ने हिंदी में गीत गाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

अरुपुकोत्ताई की श्रीरामलिंगा स्पिनर्स प्रा.लि. की एम.डी. **कोठाई धीनाकरन** ने कहा कि मैं अपने विश्वास और अनुभव से कह सकती हूं कि यदि आपको परमात्मा पर संपूर्ण निश्चय और विश्वास है तो उनकी मदद हर पल महसूस होती है। जब हम परमात्मा को सच्चे दिल से याद करते हैं तो वह हमारे सामने रक्षक बनकर खड़े हो जाते हैं। ईश्वर तो बस भाव का भूखा है, वह हमारे भाव को पढ़ लेता है। जीवन में सदा सच्चाई और सफाई रखें।

नेपाल से पधारे विधायक **भोजाप्रसाद श्रेष्ठ** ने कहा कि महात्मा बुद्ध का जो शांति स्थापना का कार्य अधूरा रह गया था, उसे ये ब्रह्माकुमारी बहनें पूरा कर रही हैं। यहां से विश्व शांति का कार्य और प्रकाश की किरणें पूरे विश्व में फैल रही हैं। कम बोलो, मीठा बोलो, धीरे बोलो -- ये महावाक्य यहां के प्रत्येक भाई-बहन के जीवन में देखने को मिला।

सेंट पीटर्सबर्ग, रसिया की निदेशिका **बीके संतोष दीदी** ने कहा कि अपने अंतर्मन में ये शब्द बसा लें कि 'मैं एक महान आत्मा हूं, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मेरा जन्म महान कार्यों के लिए हुआ है, मुझ पर सदा परमात्मा की छत्रछाया है, ईश्वर सदा मेरे साथ हैं' तो जीवन वैसा ही महान और दिव्य बन जाएगा। साथ ही राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से आपने सभी को शांति की गहन अनुभूति कराई।

सम्मेलन के बाद एक्शन प्लान प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम संयोजक व संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि सभी यहां से एक मंत्र लेकर जाएं कि आज से अपने मन को युद्धस्थल नहीं योग स्थल बनाएंगे। योग को जीवन का हिस्सा बनाकर खुद का और औरों का परिवर्तन करेंगे। हम बदलेंगे, जग बदलेगा। ■■■

परमात्मा का अद्भुत चमत्कार

■■■ डा0 प्रोफेसर रोमेश गौतम, वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली
एवं ग्लोबल चेयरमैन लीगल सेल, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन

मुझे ज्ञान सरोवर में आयोजित स्पार्क विंग के राष्ट्रीय सम्मेलन के स्वागत सत्र एवं उद्घाटन सत्र में सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परमात्मा की कृपा से मैं 7 राज्यों का महाधिवक्ता रहा। मुझे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से 50 अवार्ड मिले हैं। मैं माउन्ट आबू ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय में पहली बार आया। यहाँ आकर मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं एक असामान्य और अलौकिक स्थान पर पहुँचा हूँ। यहाँ आकर मैं अपने ऑफिस तक को भूल गया। इस स्थान की मेरे मन पर एक अलग-सी अलौकिक और अमिट छाप पड़ी। मुझे यहाँ जो आत्मिक शांति मिली उसकी तुलना धन-दौलत से नहीं की जा सकती है। मुझे यहाँ बहुत कुछ सीखने को मिला।

एक ब्रह्माकुमार भाई मेरे सम्पर्क में आये थे, उन्होंने मुझे स्पार्क विंग कान्फ्रेन्स में आने के लिए फोन किया। शुरू-शुरू में मुझे लगा कि मैं माउण्ट आबू क्यों जाऊँगा? मैं इनको जानता नहीं हूँ, इन्होंने मुझे फोन किया, मैंने गलती से अनजान व्यक्ति का फोन रिसीव कर लिया लेकिन वही अनजान व्यक्ति लगभग एक या सवा महीने के अन्तराल में मेरे परिवार का सदस्य बन गया। यह परमात्मा का अद्भुत चमत्कार नहीं तो और क्या है? परमात्मा पिता ने मुझे यह सही दिशा दिखाई, सही रास्ता दिखाया और इस रास्ते पर मैं ऑटोमेटिकली चलता गया। मेरे कुछ केसेज सुप्रीम कोर्ट में लगे हुए थे, उनके बारे में भी मैंने कुछ नहीं सोचा। मुझे उनकी कोई फिकर नहीं है, उनकी फिकर खुद परमात्मा को है। मेरा जो काम सुप्रीम कोर्ट में पेंडिंग है, वह परमात्मा खुद कर लेंगे। मैंने यही सोचा, मेरे बच्चे लॉयर हैं, वे संभाल लेंगे। मैंने उन्हें अचानक कहा कि मैं तो माउण्ट आबू ब्रह्माकुमारी आश्रम में जा रहा हूँ, वहाँ से 4 से 5 दिन के बाद ही आऊँगा।

जब मैं यहाँ आया तो मैंने देखा कि मेरे से काफी वरिष्ठ, काफी उम्रदराज बहनें, बिना किसी सहारे के चल रही हैं। उन्हें देखकर मुझे लगा कि ये उम्र के जिस पड़ाव पर हैं, इस पड़ाव में भी इतना हौसला परमात्मा ने पैदा किया है कि उन्हें किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। यह परमात्मा का घर है। परमात्मा ने यहाँ हरेक को इतनी हिम्मत दी है कि यदि किसी को घुटनों में तकलीफ है तो भी वो अपने काम के लिए, अपने आप जरूर उपस्थित रहा है। जिस तरीके से यहाँ बहनों को सम्मान मिलता है, जिस तरह की दिव्यता का जीवन वे जी रही हैं, उस प्रकार के दिव्य जीवन के लिए संविधान में अब तक, हम जैसे वकीलों की काफी कोशिशों के बाद भी सुधार नहीं हुआ है। 'हरेक मनुष्य को दिव्यता के साथ जीने का हक' मुझे निश्चय है, हम इसे जरूर प्राप्त कर लेंगे। यहाँ परमात्मा की असीम कृपा से सबको दिव्यता से जीवन जीने का हक मिल रहा है। जिसे भी देखते हैं उसके चेहरे पर दिव्य मुस्कान है, खुशी है। जिससे भी मिलता हूँ, वो ऐसा मिलन है कि जैसे पिछले जन्मों से उससे हमारे रिश्ते हैं। हम लोगों के रिश्ते खून के रिश्तों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण आत्मिक या रूहानियत के हैं। हम सभी एक परमात्मा के बच्चे हैं। हम सबके परमपिता परमात्मा जो सच्चे माँ-बाप हैं, वो एक हैं। इस वजह से हम लोग आपस में जुड़ते जा रहे हैं।

यह ब्रह्माकुमारी संगठन बहनों की उन्नति के लिए, समाज से बुराइयाँ हटाने के लिए, हमारे अच्छे और स्वस्थ जीवन के लिए राजयोग सिखा रहा है। मैंने भी 3 दिन राजयोग के सत्र अटेण्ड किये। मैंने अनुभव किया कि राजयोग के सत्र में 10 घण्टे की नींद, आधे घण्टे में पूरी हो सकती है। शरीर में कोई थकावट नहीं रहती है। मैंने रात को 10:30 बजे तक कार्य किया। प्रात: 4 बजे उठ गया लेकिन मुझे थकावट नहीं हुई क्योंकि मैंने बीच-बीच में राजयोग के सत्र अटैण्ड किये थे।

ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से सिखाए जा रहे राजयोग में भारतीय प्राचीन संस्कृति झलकती है।

आध्यात्मिक सम्पदा से ही मनुष्य को मन की शांति मिलती है। ब्रह्माकुमारी संगठन की पूरे विश्व में शाखायें हैं। इतने बड़े संगठन में, इतना अच्छा प्रबन्धन है कि कहीं भी मिट्टी नजर नहीं आ रही है, यह भी बड़ी काबिले तारीफ बात है। विदेश में भी ऐसा देखने को नहीं मिलता है। मैं अनेक देश घूमा हूँ, मैंने अपने लीगल कामों के लिए पूरे विश्व के कई चक्कर लगाये हैं लेकिन ऐसी स्वच्छता, इतना अच्छा महौल, इतने अच्छे लोग अभी तक नहीं मिले। आप विश्व के किसी भी कोने में चले जायें, इतने अच्छे लोग कहीं नहीं मिलेंगे। हम उनको एक बार ओमशान्ति बोलते हैं तो वो हमें मुसकराहट के साथ दो बार ओमशान्ति बोलते हुए ऐसा सम्मान देते हैं जैसे कि हमें बहुत पहले से जानते हों। ब्रह्माकुमारी संगठन के लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। अब मेरे नये जीवन की शुरूआत हुई है। परमात्मा ने मुझे सही दिशा दिखाई है। अब मैं यहाँ बहुत जल्दी-जल्दी आता रहूँगा। ■■■

ज्ञानयुक्त – व्यर्थमुक्त

■■■ **ब्रह्माकुमार सुधीर, चंडीगढ**

आज के व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याएँ हैं जिनसे मन में व्यर्थ विचार चलते रहते हैं और परेशानी बनी रहती है। इससे छूटने का क्या उपाय है?

अन्तर्मुखी बन ज्ञान का सिमरण करो

जब भी व्यर्थ विचार चलने लगें तो अटेन्शन देकर दृढ़ता से विचार को परिवर्तन करें। यदि कोई समर्थ विचार नहीं कर सकते तो कुछ अच्छा साहित्य, वीडियो आदि को पढ़ें अथवा देखें। हाँ, कभी-कभी परिस्थिति-वश संग ही ऐसा प्राप्त होता है जहाँ व्यर्थ बातों का वातावरण बना ही रहता है।

उदाहरणत: कार्य-स्थल पर, घर में, शादी आदि में परन्तु फिर भी इन सब हालात में अपनी हर्षितमुख स्थिति बनाये रखने के लिए श्रेष्ठ विचारों का प्रवाह मन में होना ज़रूरी है। प्रथम उपाय तो अन्तर्मुखता है क्योंकि चुप रहने से व्यर्थ बोल नहीं निकलते और समर्थ विचार करने का समय मिल जाता है। फिर यदि बोलना भी पड़े तो कोई ज्ञानयुक्त खुशी की बात बोलकर सबको खुश कर दें। परन्तु वह तब होगा जब स्वयं का ज्ञान का खाता भरपूर होगा। इसके लिए जब भी समय मिले ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण या अध्ययन बार-बार करते रहें। गाँधी जी कहते थे – जब कोई समस्या आती है तो गीता पढ़ना शुरू कर देता हूँ और समाधान मिल जाता है।

अब देखिये, जिन महान आत्माओं को स्वयं गीता-ज्ञानदाता का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त हो, उन्हें तो उसका अध्ययन दिन में जितना ज़्यादा बार हो सके, करते रहना चाहिए। कोई विपरीत परिस्थिति न भी आये तो भी दिन में 5 से 8 बार ईश्वरीय ज्ञान को पढ़कर मनन करना ही चाहिए और परिस्थिति आने पर तो और ही ज़्यादा करना चाहिए।

जो भी हुआ, वो अच्छा है

इस अविनाशी विश्व-नाटक के रंगमंच पर सभी मनुष्यात्माएँ अपना-अपना अभिनय कर रही हैं। अत: सबकुछ उचित हो रहा है। किसी खेल में कोई अच्छा खिलाड़ी भी होगा, कोई कमज़ोर भी होगा। ऐसे ही यह सृष्टि भी एक खेल है, फिर भी यदि कोई कार्य, व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि अच्छी न लगे तो श्रीमद्भगवद्गीता के ये महावाक्य भी स्मृति में लाने चाहिएँ कि जो हुआ अच्छा, जो हो रहा है और ही अच्छा और जो होगा, अच्छे-से-अच्छा ही होगा।

ऐसे ज्ञानयुक्त महावाक्यों का मनन-सिमरण करने से व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति मिल ही जायेगी। उदाहरणत: ज्ञानामृत के लेखों को दो-तीन बार पढ़ा जाये तो पढ़ते-पढ़ते ही कुछ समय के लिए व्यर्थ बातों से किनारा हो जाता है। फिर उनको धारण करने पर समर्थ एवं शक्तिशाली बन ही जायेंगे। ■■■

बाल दिवस पर विशेष ..

क, ख, ग, घ का अर्थ

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

प्यारे बच्चो, बाल दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ! आपने जब विद्यालय में दाखिला लिया तो हिन्दी वर्णमाला अवश्य सीखी होगी। इसकी शुरूआत 'क' से होती है। इसके बाद 'ख', 'ग', 'घ' आदि अक्षर क्रम से आते जाते हैं।

आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि से बहुत जल्दी क, ख, ग, घ... आदि सब अक्षर लिखने-पढ़ने-बोलने सीख लिए परन्तु (1) लिखना, (2) पढ़ना, (3) बोलना – ये तो तीन पहलू ही हुए, एक चौथा पहलू भी है इनका। जैसे आप जिस कुर्सी पर बैठते हो या टेबल, बैंच, स्टूल आदि का प्रयोग करते हो इन सभी के चार पाँव (टाँगें) होते हैं। चार पाँव होने से इनका सन्तुलन बना रहता है और इन पर बैठने वाला व्यक्ति या इन पर रखी चीज हिलती-डुलती नहीं है, स्थिर रहती है। हमें भी जीवन की परिस्थितियों और हलचलों के बीच, रोग-शोक-कष्टों और भाव-स्वभाव-संस्कार की टकराहट के बीच यदि मानसिक स्थिरता चाहिए तो वर्णमाला के विभिन्न अक्षरों का एक चौथा पहलू भी सीखना पड़ेगा। वो पहलू कौन-सा है?

'क' अर्थात् कर्म

क्या हम सही तरीके से कर्म करना सीखे? क्या हम अपने कर्मों के मास्टर बने? क्या हम ऐसे कर्म करते हैं, जो हम कर्मबन्धनों से मुक्त रहें अर्थात् हमारे कर्म हमें बांधें ना।

बिना स्वीकृति सम्मति ना छूएँ

एक बार राजवैद्य महर्षि चरक औषधियों की खोज में शिष्यों के साथ वन में घूम रहे थे। उन्होंने एक खेत में नए और विलक्षण फूल को देखा। वे उसे निहारते रहे। एक शिष्य ने कहा, गुरुवर, मैं फूल तोड़ लाता हूँ, आप बैठकर अवलोकन कर लेना। महर्षि ने कहा, वत्स, खेत के मालिक की अनुमति के बिना फूल कैसे तोड़ा जा सकता है, यह तो चोरी होगी। शिष्य बोला, फूल जैसी छोटी चीज के लिए स्वीकृति की भला क्या आवश्यक्ता है और फिर आपको तो राजाज्ञा है कि औषधियों के निर्माण के लिए वनस्पतियों की खोज करें।

महर्षि चरक गम्भीर होकर बोले, राजाज्ञा होना अलग बात है लेकिन हमारा नैतिक दायित्व कहता है कि हम बिना मालिक की स्वीकृति के किसी की सम्पत्ति को हाथ भी ना लगाएं। इसके बाद मीलों चलकर महर्षि खेत के मालिक के पास पहुँचे और उनकी स्वीकृति से ही फूल तोड़ा गया।

श्रम का सम्मान

बात उस समय की है जब देश का विभाजन हुआ था और चारों ओर साम्प्रदायिकता की आग जल रही थी। पुलिस और सेना की मौजूदगी में शान्ति कायम नहीं हो रही थी। इन्हीं दिनों साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अनशन शुरू किया और एक सौ एक्कीस घंटे बिना आहार के रहे। जब उनका अनशन तुड़वाया गया तो वे काफी कमजोर हो गये थे। कमजोर होने पर भी, अनशन तोड़ने के तुरन्त बाद वे चरखा चलाकर सूत कातने लगे। डॉक्टरों ने इसके लिए मना किया तो वे धीमे स्वर में बोले, 'बिना मेहनत के प्राप्त की गई रोटी वास्तव में चोरी की होती है। अब मैंने भोजन करना शुरू कर दिया है तो मुझे श्रम भी करना चाहिए।'

प्यारे बच्चो, उपरोक्त दोनों घटनाएँ हमें कर्म में नैतिकता और जीवन में श्रम का महत्त्व बताती हैं। हम इन्हें अपने कर्मों में अवश्य उतारें।

'ख' अर्थात् खाना

क पहले है, इसका अर्थ है पहले कर्म करें, फिर खाएँ। खाने के भी नियम हैं।

क्या खाएँ – जो देवी-देवताओं के भी भोग्य पदार्थ हैं, ऐसे (सात्विक) खाद्य पदार्थ खाएँ। शरीर के स्वास्थ्य के अनुकूल खाएँ। बासी, गला हुआ, कंकर-मिट्टी युक्त न खाएँ। राजसिक, तामसिक न खाएँ, बहुत मिर्च-मसाले वाला न खाएँ।

कैसे खाएँ – भगवान की याद में खाएँ, मौन रहकर खाएँ, प्रकृति माँ का अहसान मानते हुए खाएँ। जो मिला, जितना मिला, सन्तोष के साथ खाएँ। खिलाने और बनाने के निमित्त व्यक्ति का धन्यवाद करते हुए खाएँ। केवल अपने हक का खाएँ, बाँटकर खाएँ, चोरी करके, छिपा करके, बेहक का न खाएँ। स्वच्छता से खाएँ, एकाग्रता से खाएँ, धैर्य के साथ चबा-चबा कर खाएँ। लालच से न खाएँ। स्वाद के वश होकर न खाएँ।

कितना खाएँ – भूख से पौना भोजन खाएँ। इतना न खाएँ जो पेट में पड़ा भोजन हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता रहे और हम कोई कार्य एकाग्रता से न कर सकें। छीना-झपटी करके न खाएँ। झूठ बोलकर न खाएँ।

कब खाएँ – भूख लगने पर खाएँ, भोजन के समय पर खाएँ, बड़ों और छोटों को मान देकर खाएँ। बार-बार न खाएँ।

जब स्वाद भी कुदरत बनाए और उन्हें भोगने की इन्द्रियाँ भी उसी ने निर्मित की हैं तो प्रश्न उठता है कि स्वाद का त्याग क्यों किया जाए? क्यों न उसका उपयोग किया जाए और आनन्दित हुआ जाए? उसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वाद का आनन्द लिया जाना चाहिए परन्तु उसका गुलाम नहीं बनना चाहिए जिससे उसके न मिलने पर हम परेशानी अनुभव करें और उचित या अनुचित तरीकों से उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। किसी व्यक्ति की गुलामी से बचना आसान कार्य है परन्तु इन्द्रियों की गुलामी से बचना महाकठिन कार्य है। स्वाद में व्यक्ति को गुलाम बनाने की प्रवृत्ति होती है और गुलामी किसी की भी क्यों न हो, त्याज्य होती है।

अन्य इन्द्रियों (श्रवणादि) को जीत लेने पर भी जब तक रसना इन्द्रिय पर विजय प्राप्त न की जाए, मानव जितेन्द्रिय नहीं हो सकता। रसनेन्द्रिय को जीत लेने पर सभी इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं। रसना के द्वारा खाये हुए पदार्थों का अन्य इन्द्रियों सहित सारे शरीर पर प्रभाव पड़ता है। अत: रसना के द्वारा रजोगुणी और तमोगुणी पदार्थों का त्याग कर सत्वगुणयुक्त आहार करने पर सभी इन्द्रियाँ सत्वगुणयुक्त होंगी।

'ग' अर्थात् प्रभु के गुण गाएँ

गुण गाने का अर्थ है परमात्मा पिता के गुणों का स्मरण करें और गुणवान बनें। भगवान गुणों के भण्डार हैं। यदि हम उनके अनेक गुणों में से एक दया के गुण को भी याद कर लें तो मानवता के कष्ट मिटाने में काफी योगदान दे पाएँगे। भगवान अपनी दया का गुण किसी न किसी के माध्यम से ही प्रकट करते हैं। हमें उनका वो माध्यम बनने का सौभाग्य प्राप्त हो, ऐसी शुभकामना रखें।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक करुणामय और परोपकारी व्यक्ति थे। एक बार उन्हें पता चला कि जयराज नामक दानवीर, परोपकारी, दयालु सज्जन की मृत्यु हो गई है और उसकी स्त्री के पास दाह संस्कार हेतु पैसे तक नहीं हैं।

विद्यासागर जयराज को जानते तक नहीं थे, बस पूछताछ करके उसके घर पहुँच गये। जयराज के मृत शरीर के पास रोती-बिलखती महिला को ढांढ़स बँधाते हुए विद्यासागर ने कहा, भाभी, जय बाबू से मैंने कुछ दिन पूर्व कर्ज लिया था, मैं कुछ रुपये लेकर आ ही रहा था कि यह दुखद समाचार मिला। कृपा करके ये रुपये लीजिए, बाकी मैं धीरे-धीरे चुका दूँगा। जयराज की विधवा ने सधन्यवाद वह राशि ले ली।

भविष्य में भी विद्यासागर जयराज के परिवार के लिए कुछ रुपये भेजते रहे। कुछ वर्षों के बाद जयराज की विधवा को वास्तविकता का पता चला तो वह विद्यासागर के अनूठे झूठ पर चकित रह गयी। अपने लड़कों के साथ विद्यासागर के पास गई। उनके पैरों पर गिरकर रोने लगी और कहा, आपने हमारे लिए इतना बड़ा झूठ बोला, हम इसको कैसे चुका पायेंगे। विद्यासागर बोले, 'यदि झूठ पवित्र हो तो बोलने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए।' बच्चो, दया में डूबा हृदय दूसरों पर परोपकार के लिए ऐसी झूठ बोल दे तो उसका पाप नहीं लगता।

'घ' अर्थात् घमण्ड से बचें

प्यारे बच्चो, नम्र बनने वाले को सब नमन करते हैं। हमारे पास यदि कोई गुण, कला, विशेषता है तो उसे परमात्मा की देन मानकर, सबके हित में लगाएँ। इससे सबकी दुआएँ मिलेंगी और हम बिना मेहनत बहुत आगे बढ़ जाएँगे। कहा जाता है, घमण्डी का सिर नीचा होता है। घमण्डी व्यक्ति उस ऊँचे खजूर के वृक्ष समान होता है

जिसकी छाया और फल राहगीर के काम नहीं आते। इंसान के जीवन का प्रथम लक्ष्य है घमण्ड का विसर्जन और प्रेम, आनंद, शान्ति की प्रस्थापना।

एक राजा के दरबार में जब भी भिक्षु आते थे तो वे हमेशा सभी भिक्षुओं और संन्यासियों के आगे सिर झुकाकर उनका स्वागत किया करते थे। मंत्रियों को यह बात बहुत खटकती थी कि इतने बड़े सम्राट होने के बावजूद वे दीन-हीन भिक्षुओं के आगे सिर क्यों झुकाते हैं।

एक दिन मंत्रियों ने राजा से आग्रह किया कि वे भिक्षुओं के आगे सिर न झुकाया करें क्योंकि इससे उनकी शान घटती है। राजा यह सुनकर मुस्करा दिए। इस घटना के बाद राजा ने अपने मंत्रियों से कहा, 'वे कहीं से तीन मृत पशुओं और एक मृत मनुष्य का सिर लेकर आएँ।' मंत्री इस अजीब आदेश को सुनकर हैरान रह गए लेकिन सम्राट का हुक्म वे कैसे टाल सकते थे? वे चुपचाप जाकर मृत पशुओं और मृत मनुष्य का सिर ले आए। इसके बाद राजा ने अपने मंत्रियों से कहा, 'वे बाजार में जाएँ और चारों सिरों को बेच आएँ। दाम चाहे जितने मिलें लेकिन सिर बिकने चाहिएँ।'

मंत्रियों ने शाम को लौटकर बताया कि 'पशुओं के सिर तो बिक गए लेकिन इंसान का सिर बिक नहीं पाया।' यह सुनकर राजा ने उनसे कहा, 'वे जाकर किसी को इंसान का सिर मुफ्त में दे आएँ।'

मंत्रियों ने लौटकर कहा, 'इंसान के सिर को कोई मुफ्त में लेने को भी तैयार नहीं है।' राजा ने मुस्कराते हुए मंत्रियों से कहा, 'अब आप सभी को समझ में आ गया होगा कि इंसान के सिर का मूल्य क्या है। कोई इसे मुफ्त में भी नहीं लेना चाहता तो इसका अर्थ है कि यह मूल्यहीन है। फिर इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह किसी के सामने झुकता है या किसी के कदमों में गिरता है।' मंत्रियों को बात समझ में आ गई और उन्होंने दोबारा कभी राजा की विनम्रता के बारे में कोई सवाल नहीं किया।

प्यारे बच्चो, वर्णमाला का हर वर्ण किसी न किसी गुण की ओर इशारा करके उसे जीवन में धारण करने की प्रेरणा देता है जैसे – 'च' से चलते रहने की, 'छ' से छटा बिखेरने की, 'ज' से जीवन का सम्मान करने की, 'झ' से झगड़ा न करने की आदि-आदि। इस बार इतना ही, शेष फिर कभी। ■■■

कैसी यह दीवाली है

■■■ ब्रह्माकुमार निर्विकार श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ

बहुत दिनों से मना रहे हैं, कैसी यह दीवाली है।
अन्धकार बढ़ता जाता है, घोर निशा अब काली है।।

घर की खूब सफाई कर मिट्टी का दीप जलाते हैं।
दृष्टि–वृत्ति रख के विकारी, मदिरा गले लगाते हैं।।
जुआ खेलते, कामुकता की जैसे आग लगा ली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

आत्मदीप जला करके, न दीप जलाते मिट्टी का।
धन–दौलत और संपत्ति खातिर, गायन करते लक्ष्मी का।।
लक्ष्मी अब तक आई नहीं, घर पड़ा हुआ सब खाली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

लक्ष्मी–वाहन देख रोशनी, स्वयं वह अंधा हो जाता।
अपनी मलिका देवी को लेकर, दूर से चंपत हो जाता।।
कभी नहीं आई है अब तक, केवल रस्म बना ली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

ज्ञान के घृत को डाल के अब, आत्म–ज्योति को तेज करो।
विषय विकारों पर विजयी बन, पापों से परहेज करो।।
श्रीमत पर चलने के हित, अब शिव से शिक्षा पाली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

परम–ज्योति से जोड़ के नाता, मन की ज्योत जगानी है।
63 जन्मों की कमियाँ जो, राजयोग से जलानी हैं।।
आत्म–ज्योति जग जाये, तो समझो सच्ची दीवाली है।
बहुत दिनों से मना रहे हैं...

भगवान ने कहा, बच्ची साफ दिल और सच्ची है

▪▪▪ ब्रह्माकुमारी शक्ति, राजौरी गार्डन, दिल्ली

परमात्म प्यार से सराबोर अब तक का मेरा जीवन ऐसा रहा है जैसे कि प्यारे शिवबाबा ने अपनी गोद में लेकर मेरी पालना की है। मेरा जन्म जिला सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) के गाँव हलालपुर में एक राजपूत परिवार में हुआ। घर में भी राजपूती आन-बान और मर्यादाओं का पालन किया जाता था। पिताजी गाँव के रसूखदार व प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

बालमन में उमड़ते थे प्रश्न

मैं बचपन से ही बहुत शान्तिप्रिय, सन्तुष्ट व दृढ़प्रतिज्ञ थी। जब से होश संभाला था, मुझे यह भासना आती थी कि मैं एक विशेष रचना हूँ। सहेलियों को गुड़िया से खेलते हुए देखकर सोचती थी कि मेरे जीवन का प्रयोजन क्या है? प्रकृति का उन्मुक्त वातावरण बहुत आनंदित करता था और घर में माँ और दादी का वात्सल्य मुझ पर अधिक बरसता था। दोनों ही ईश्वर की अनन्य भक्ति-भावना से ओत-प्रोत थीं। उनकी पूजा-पाठ को मैं बड़ी गंभीरता से देखती थी कि कैसे वो देवता की मूर्ति को भोग लगाती हैं, उन्हें नहलाती हैं, कैसे वे उनसे बातें करती हैं। उनको यह सब करते देखकर मैं सोच में पड़ जाती थी कि क्या इस मूर्ति में भगवान है? क्या भगवान भी हमारी तरह खाते हैं? इस तरह के अनेक प्रश्न मेरे बालमन में उमड़ पड़ते थे।

दीदी ने किया नया नामकरण

ग्यारह वर्ष की उम्र में , दिल्ली में रहने वाले मेरे मामा जी के माध्यम से मुझे ईश्वरीय ज्ञान में आने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। मेरे लौकिक घर में ब्रह्माकुमारीज के विषय में कोई कुछ नहीं जानता था परन्तु मामा जी के द्वारा ही उन्हें भी थोड़ी-बहुत जानकारी मिली थी। अधिक जानने की उनकी कोई उत्कंठा भी नहीं थी। ईश्वरीय ज्ञान को समझने के बाद मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास बैठ गया कि जिसकी चाहना थी, उसकी प्राप्ति मुझको हो गई है। पिता परमात्मा ने मेरी सच्ची लगन को देखते हुए, मेरी पुकार को सुन कर, मुझे ग्यारह वर्ष की आयु में ही मधुबन बुला लिया। मैं अपने मामाजी के साथ मधुबन पहुँची और अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाया। वहीं दीदी मनमोहिनी से मेरा अलौकिक मिलन हुआ। मैं उनके साथ भोजन की मेज पर बैठी हुई थी। मैं घबरा रही थी क्योंकि सभी लोग मेरे लिए अजनबी थे। मनमोहिनी दीदी बड़े प्यार से मेरी ओर देख रही थी। उन्होंने मुझसे पूछा, ब्रह्माकुमारी बनना है? मैंने सकुचाते हुए कहा, हाँ। वे हँसने लगी और बोली, ब्रह्माकुमारी इतनी कोमल और शर्मिली नहीं होती। तभी उन्होंने मुझे नया व अलौकिक नाम दिया 'शक्ति'। इस नाम को सुनते ही मैंने एक अद्भुत ऊर्जा को अपने में अनुभव किया। आज दिन तक उनके दिए इस नाम से मैं स्वयं को धन्य-धन्य मानती हूँ।

बाबा से मिला वरदान

इस नए नाम के साथ मेरा अव्यक्त बापदादा के साथ अद्भुत मिलन हुआ। बापदादा के कमरे में उनके सम्मुख बैठकर मैं भाव-विभोर हो रही थी। बापदादा की प्यार भरी दिव्य दृष्टि से मेरा अंतर्मन प्रफुल्लित हो उठा। बाबा के अमृत वचन, जो उन्होंने मेरे लिए कहे, आज भी मेरे कानों में गूँजते रहते हैं। बापदादा ने कहा, यह बच्ची हाईजम्प लगाने वाली, साफ दिल व सच्ची बच्ची है। बापदादा के इन वरदानों ने मेरे जीवन को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया।

बकरी हो या शेरनी

इधर मैं बापदादा, दीदी और दादियों से पालना लेती रही और दूसरी ओर लौकिक घर पर मेरी शादी की तैयारियाँ जोर-शोर से होने लगीं (मेरी आयु पंद्रह वर्ष की हो गई थी)। बाबा अपनी मुरलियों में कहते हैं कि परिपक्व बनने के लिए परीक्षाएँ देनी जरूरी हैं। घर पर एक नए प्रकार की परीक्षा मेरा इंतजार कर रही थी। दिल्ली से मुझे सहारनपुर बुलाया गया। यह बात सन् 1973 की है। उन्हीं दिनों मनमोहिनी दीदी दिल्ली में 'पांडवभवन' का उद्घाटन

करने आई हुई थी। उद्घाटन सत्र में स्टेज सजी हुई थी। मैं बहुत बेचैन थी कि दीदी से मिलकर अपनी समस्या से उनको अवगत कराऊँ। मौका पाकर मैं स्टेज पर पहुँची और दीदी से मिलकर रोने लगी। दीदी ने बड़े ध्यान से मेरी बात सुनी और हँसते हुए बोली, बकरी हो या शेरनी हो? अगर बकरी होंगी तो खूँटे से बंध जाओगी और शेरनी होंगी तो वापस आ जाओगी। दीदी के इन महावाक्यों से मुझे दिशा-निर्देश मिल गया और मन में असीम शान्ति व शक्ति का अनुभव किया।

आपदा टल गई

बापदादा पर निश्चय करके मैं अपने गाँव आ गई। मुझे देखकर घरवाले बहुत खुश हुए। घर में जोरों से तैयारियाँ चल रही थीं। इस शादी के पीछे भी बड़ी रोचक कहानी थी। जिस लड़के से मेरी शादी होने जा रही थी, उससे मेरी सगाई, मेरे जन्म के साथ ही कर दी गई थी। पिताजी के दोस्त ने मुझे अपने परिवार के लिए भाग्यशाली मानते हुए, बचपन में ही मुझे अपने पुत्र के लिए पसंद कर लिया था। मेरी यह सगाई गुड्डे-गुड्डियों की सगाई जैसी ही थी। हालांकि घर के सभी सदस्य जानते थे कि मैं ब्रह्माकुमारी बनना चाहती हूँ और मैं यह शादी नहीं करना चाहती परन्तु बाबूजी के सामने बोलने की किसी की भी हिम्मत नहीं थी। घर में नेगचार किए जा रहे थे, रस्में निभाई जा रही थीं पर मैंने अटल निश्चय के साथ इनसे दूरी बना रखी थी। बारात वाले दिन मेरी दादी मेरे पास आई और उन्होंने मेरे मन को टटोलने की कोशिश की। तब मैंने गंभीर होकर कहा कि दादी, मुझे नहीं पता कि इस शादी का क्या परिणाम होगा? मेरे चेहरे की गंभीरता से और इस जवाब से दादी ने वास्तविकता को भाँफ लिया और पिता जी को बुलाकर उन्हें सारी वस्तुस्थिति समझाते हुए उनके साथ मंत्रणा की। उधर से लड़के और उसके पिताजी से वार्तालाप हुआ। काफी कोहराम मचा पर शायद नियति मुझ पर मेहरबान थी या फिर कहूँ कि परमात्मा ने मेरा वरण कर लिया था। घर में शहनाइयाँ भी बजीं, दुल्हन भी बनी, शादी भी हुई, विदाई भी हुई परन्तु मेरे स्थान पर मेरी बहन की। उन्होंने इस आपदा को अपने ऊपर ले लिया जिसके लिए मैं आज दिन तक उनकी शुक्रगुजार हूँ।

घर बना काल-कोठरी

आप समझ सकते हैं कि बारात जाने के बाद घर में क्या हाल हुआ होगा? जैसे ही बहन की विदाई हुई, पिता जी के क्रोध का पारावार नहीं रहा। बाहर आँगन में मुझे खड़ा करके उन्होंने मुझ पर बंदूक तान दी और बोले कि अब देखता हूँ कि तेरा बाबा परमधाम से नीचे आता है या तुम परमधाम जाती हो। चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई। पिताजी को लोगों ने पकड़ा और मुझे पड़ोसी के घर ले जाया गया जहाँ मैं तीन-चार दिन तक रही। इस तरह आरंभ हुआ मेरा वनवास। जैसे-तैसे पिताजी को शांत किया गया पर मेरे लिए, मेरा घर ही काल-कोठरी बन गया। घर में ऊपर छत पर मुझे दो कमरे दे दिये गये। किसी को मुझसे बात करने की इजाजत नहीं थी परन्तु मैं अपनी मस्ती में मस्त रहती थी। मधुबन से जो पुस्तकें और बाबा की मुरलियाँ लाई थी, उन्हें पढ़ती रहती थी और बाबा पर अटल निश्चय के साथ एक-एक क्षण गुजार रही थी। जो भी मेरे पास आता, मैं उसे मुरली की प्वाइंट्स सुनाती। माँ और दादी को मेरी हालत पर तरस आता परन्तु वे भी पिताजी के आगे मजबूर थीं। मैं इस परिस्थिति में तीन महीने रही। मैंने भोजन छोड़ दिया था। माँ और दादी आकर जबरदस्ती दूध, छाछ, दही खिला देती थी पर मुझे तो जैसे इन सबसे विरक्ति-सी हो चुकी थी। इस कठिन समय में मेरे जीवन का आधार था मेरा बाबा और मनमोहिनी दीदी के मेरे नाम से आने वाले पत्र जिनमें वे हमेशा मेरा हौसला बढ़ाती रहती थी।

रोक दी गई मधुबन की पोस्ट

मेरी हिम्मत टूटती न देख पिताजी और सख्त हो गए। डाकिए द्वारा लाई गई पोस्ट बीच में ही रोकी जाने लगी और इस तरह, उस वक्त मेरे जीवन का जो आधार था, वो भी बंद कर दिया गया। विरोध को बढ़ते देखकर मैंने निश्चय किया कि इस तरह जीने से तो अच्छा है, मुझे अपने प्राण त्याग देने चाहिएँ और आत्महत्या करने के उद्देश्य से मैं अमृतवेले घर से निकल गई। बड़ा भयावह अंधियारा था। गाँव के बाहर नहर थी। मैंने सोचा था कि उसमें कूदकर अपनी इहलीला समाप्त कर लूँगी। आज तो वह बात याद करके हँसी आती है। नहर पर पहुँचकर मैं डर गई क्योंकि

शेष भ ाग पृष्ठ . . 24 प

दूसरों के लिए कुछ करने का सपना

▪▪▪ ब्रह्माकुमार रोशन, कोलकाता

मेरी उम्र 21 वर्ष है और एक आई.टी.कंपनी में काम करता हूँ। राजयोग के अभ्यास द्वारा मुझे जो प्राप्तियाँ हुई हैं, उनका संक्षिप्त रूप में वर्णन कर रहा हूँ

नकारात्मक सोच अपने बारे में

ज्ञान में आने के पहले मैं देर से सोता था, तामसिक भोजन करता था, लड़ता था और दूसरों को तंग करता था। माँ-बाप की सुन लेता था, सबकी मदद भी करता था, टीचर्स भी खुश रहते थे, पढ़ाई में भी अच्छा था लेकिन थोड़ा बेवकूफ भी था। समझदारी तो बहुत ही कम थी। लोग कहते थे कि मुझमें कॉमन सेंस नाम की चीज नहीं है। गलतियाँ बहुत करता था। बाजार से सामान लाते वक्त बाकी बचे पैसे लेना भूल जाता था और इसी प्रकार की छोटी-छोटी गलतियाँ बहुत करता था। डल बुद्धि थी मेरी। घर वाले कहते थे कि तुम कभी भी घर से बाहर नहीं रह सकोगे, तुम्हें तो कोई भी बेवकूफ बना देगा लेकिन इन सबके बावजूद भी सब कुछ सही चल रहा था। मेरी जिंदगी में, मेरे पास कोई परेशानी नहीं थी। घर वाले जो कहते थे, पहले तो उस बारे में मैं ज्यादा सोचता नहीं था। परन्तु, फिर धीरे-धीरे अपने बारे में नकारात्मक विचार करने लगा जैसे कि मैं नालायक हूँ, मेरा नसीब बहुत खराब है, मुझसे कोई भी प्यार नहीं करता, मेरा कोई सच्चा दोस्त नहीं है आदि-आदि। ये नकारात्मक बातें मैं अपने आपसे बार-बार रिपीट करने लगा जिससे मुझमें यही लक्षण आने लगे।

गुस्सा, चिड़चिड़ापन और डिप्रेशन बढ़ने लगे

मेरे जीवन का कोई लक्ष्य भी नहीं था। मैं सोचता था, क्या बाकियों की तरह पढ़ाई की, नौकरी की, शादी हुई, बच्चे हुए, बुढ़ापा आया, पूजा-पाठ किया और एक दिन खत्म...बस इतना ही? ऐसी जिन्दगी मैं नहीं चाहता था। विचार उठा, कुछ अलग करूँगा। ऐसा काम, जो कोई भी नहीं कर सकता है, सिर्फ मैं ही कर सकता हूँ। मुझे खुशी की जरूरत थी, मेरे दिल की इच्छा थी कि मैं सभी को खुशी बाँट सकूँ और सारी दुनिया के लोगों को मुस्कराता हुआ देख सकूँ। बड़ी खुशी होती है जब हमारी वजह से कोई व्यक्ति, कोई प्राणी या प्रकृति भी खुश होती है तो। पर खुशी बाँटने की मेरी इच्छा कहाँ पूरी होती! ऐसा कोई कॉलेज ही नहीं मिला मुझे। लोग बी.टेक करते हैं, एम.बी.ए.करते हैं, आई.ए.एस. बनते हैं, विदेश जाते हैं, बहुत धन कमाते हैं परन्तु खुशी नहीं कमाते, तनाव में ही जीवन बीत जाता है उनका। मुझे ऐसा जीवन नहीं चाहिए था, मुझे सबको खुशी बाँटनी थी लेकिन मेरे पास खुशी का खजाना हो, तब तो खुशी दूँगा न सबको। हर रोज घर वालों से नकारात्मक महामंत्र सुनता था और परिणाम यह हुआ कि मेरी आत्मिक शक्तियाँ कम होने लगी, एकाग्रता बहुत कम हो गई, अध्ययन कमजोर होने लगा, गुस्सा और चिड़चिड़ापन बढ़ने लगा। डिप्रेशन की तरफ जाने लगा। एक रात हनुमान चालीसा पढ़कर मैंने भगवान को बुलाया कि मुझसे आकर मिलो। फिर सोचा, मेरे लिए उनके पास समय ही कहाँ होगा?

आने लगा सुधार

मेरी माँ ब्रह्माकुमारीज में जाती थी, मुझे पसंद नहीं था। मैंने सोचा, वहाँ भी बाकी सत्संगों की तरह ही होगा। एक दिन सोचा, डिप्रेस होने से बचने के लिए यही एक तरीका है, भले ही स्वार्थ के लिए ही सही पर मुझे एक बार जाकर सात दिन का कोर्स करना चाहिए। सात दिन का कोर्स करना शुरू किया तो कुछ भी समझ में नहीं आया। सिर्फ एक चीज अच्छी लगी, वह थी, वहाँ के लोगों की खुशी। खुशी के आकर्षण में मैं रोज जाने लगा और ज्ञान की क्लास करने लगा। कुछ मास बाद जब मैंने राजयोग का अभ्यास और बढ़ाया तो मुझमें सुधार आने लगा। फिर मैंने अनुभव किया कि मेरी पढ़ाई में भी सुधार आने लगा है और एकाग्रता भी बढ़ने लगी है। मेरा मन शान्त होने लगा

और हीन भावना खत्म होने लगी, आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ने लगे। आत्मा की नॉलेज से सबके प्रति अपनापन आने से, सबके प्रति शुभभावना और शुभकामना रहने लगी और सकारात्मक विचार भी आने लगे।

राजयोग है जादुई छड़ी

कुछ मास बाद मैंने सोचा कि सात्विक भोजन भी अपनाया जाए। सुना हुआ था कि जैसा अन्न होगा, वैसा मन होगा। जब एक मास तक मैंने सात्विक अन्न खाया तो पाया कि मेरी आत्मिक शक्ति बढ़ने लगी, मन में खुशी, चेहरे पर मुस्कान और चमक आने लगी। मैंने पाया कि मेरी परखने और निर्णय करने की शक्तियाँ भी बहुत बढ़ गयी हैं। मेरा स्वास्थ्य भी पहले से बेहतर हो गया। आखिरकार मुझे एक ऐसा विश्व विद्यालय मिल ही गया जिसमें भगवान पढ़ाते हैं, जीवन जीना सिखाते हैं और खुशी का खजाना बाँटना सिखाते हैं। यह मेरा नया जीवन है जिसमें नई सोच, नया विश्वास, नया लक्ष्य मेरे साथ है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है, "They only live who live for others, others are more dead than alive"। मेरा भी सपना है कि सभी को मुस्कराता हुआ देखूँ, दूसरों के लिए कुछ करूँ। अपने लिए तो सभी जीते हैं, क्यों न हम दूसरों के लिए कुछ करें। राजयोग ही वो जादू की छड़ी है जिससे हम यह जादू सहज ही कर सकते हैं। इस समय खुदा दोस्त मेरे साथ है और मेरी जीत निश्चित है! कोई भी परिस्थिति मुझे मेरा सपना पूरा करने से रोक नहीं सकती। ■■■

किसी की लाठी बनें जिसकी मदद लेकर कोई अपने पैरों पर चलना सीखे। जादुई कालीन न बनें जिस पर बैठकर कोई बिना मेहनत के पार होना चाहे। ऐसे में न तो वो कभी संतुष्ट होगा, ना ही सक्षम बनेगा।

पृष्ठ . . 22 का शेष भ ाग

मौत को गले लगाना कोई आसान काम थोड़े ही है। चारों तरफ गहरा अंधेरा और लोगों की चहलकदमी मुझे डरा रही थी। अब मेरे सामने हालात ऐसे थे कि एक तरफ कुआँ, दूसरी तरफ खाई। किधर जाऊँ? आँखें बंद कर बाबा से बातें कीं और एक विचार कौंधा। मैं प्लेटफार्म की ओर चल दी और बिना टिकट लिए अकेले ही रेल में बैठ गई तथा अम्बाला पहुँच गई, जहाँ मेरी मामी और नाना जी रहते थे। पहले तो उन्होंने मुझ पर गुस्सा किया और मेरा साथ देने से मना कर दिया परन्तु बाद में नाना जी मान गए।

खुल गए अलौकिक घर के दरवाजे

फिर नानाजी मेरे साथ मधुबन आए। यहाँ का शांत व स्वच्छ वातावरण देखकर उन्हें सन्तुष्टि हुई और उन्होंने मुझे ब्रह्माकुमारी बनने की अनुमति दे दी। इस तरह, लौकिक घर के दरवाजे मेरे लिए बंद हो गए और अलौकिक घर के दरवाजे खुल गए। मामा जी और नाना जी के सहयोग से मैंने एक नया जन्म पाया जिसके लिए मैं उनकी हमेशा कृतज्ञ रहूँगी। मधुबन में मुझे रुक्मिणी दादी का वरदहस्त प्राप्त हुआ। इस तरह मैंने अपना जीवन नए सिरे से आरंभ किया। पहले-पहले मैंने बनारस, अजमेर, ब्यावर, नसीराबाद, जयपुर आदि सेवाकेन्द्रों पर सेवा दी और वर्तमान में रुक्मिणी दादी के साथ दिल्ली, राजौरी गार्डन में अपनी सेवाएँ देते हुए अलौकिक जीवन को सार्थक कर रही हूँ।

यही मीरा है

परिस्थितियाँ तो पार हो गईं परन्तु वे मुझे बहुत कुछ सिखा कर गईं। सेन्टर पर रहने के कुछ सालों बाद मेरे भाइयों और भाभियों ने मुझे लौकिक घर आने का निमंत्रण दिया। मैं वहाँ गई तो पूरा गाँव मुझे देखने के लिए उमड़ा। उन सभी के मुख से यही निकला कि उस मीरा को तो हमने नहीं देखा परन्तु हमारे लिए यही मीरा है। अब वो समय आया है कि जिन्होंने मेरा त्याग कर दिया था, आज वही अपने सिर और आँखों पर मुझे बैठाते हैं और सम्मान देते हैं। ''वाह मेरा बाबा वाह! वाह ड्रामा! वाह मेरा जीवन, वाह मेरा भाग्य!" यह गीत गाते मैं अलौकिक जीवन बड़ी खुशी से जी रही हूँ। ■■■

आपसी सम्बन्धों में समरसता

ब्रह्म ाकुम ार शुभ्र, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)

सृष्टि के हर कोने से आज सम्बन्धों में बढ़ती हुई कड़वाहट की आवाज सुनाई दे रही है। आज किसी इन्सान को यदि पूछा जाए कि आपके दूसरों के साथ सम्बन्ध कैसे हैं? तो शायद यही उत्तर मिलेगा कि जिनके लिए मैंने जीवन भर इतना किया, उनका मुझसे व्यवहार असहनीय और निन्दनीय है। सम्बन्ध बाहर से तो सुन्दर दिखते हैं लेकिन अन्दर झांककर देखें तो विष और पीड़ा के ही दर्शन होते हैं। आपसी सम्बन्धों को लेकर दूसरों की शिकायतें मनुष्य के मन को व्याकुल कर रही हैं।

पारस्परिक सम्बन्धों का आधार है स्नेह। हम सभी को जीवन में बहुत प्रकार के सम्बन्धों में आना पड़ता है, विभिन्न संस्कारों के व्यक्तियों से व्यवहार करना होता है, जीवन कभी भी अकेला नहीं है। सम्बन्धों के बिना जीवन का कोई मूल्य नहीं है। क्या हमने कभी सोचा है कि सम्बन्ध क्यों बिगड़ गये? क्या गलती हो रही है? आइए जानें, सम्बन्धों के टूटने के कुछ मूल कारण –

स्वार्थ

स्वार्थपूर्ति ना होने पर मनुष्य आपसी स्नेह, पूर्वकाल के उपकार आदि सब कुछ भूल जाते हैं। स्वार्थी मनुष्य कितने निर्दयी बन जाते हैं, यह आज चारों ओर प्रत्यक्ष हो रहा है। वह बेटा, जिसकी माँ-बाप ने सच्चे दिल से पालना की थी, जरा-सी स्वार्थपूर्ति न होने पर माँ-बाप को छोड़कर चला जाता है। दूसरी तरफ, माँ-बाप की अपनी सन्तान के प्रति अधिक चाहना रखना कि यह बड़ा होकर डॉक्टर या इंजीनियर बनेगा, इसलिये आज इतने रुपये खर्च कर रहा हूँ, आगे चलकर वो मुझे देखेगा, इसलिए आज इतना समय उसके पीछे व्यतीत कर रहा हूँ, यह भी एक प्रकार का स्वार्थभाव ही हुआ। पति और पत्नी का सम्बन्ध कितना सुखद है परन्तु दहेज की स्वार्थपूर्ति के अभाव में उसी पत्नी को मार कर घर से निकाल दिया जाता है अथवा मौत के मुँह में घकेल दिया जाता है। दूसरी तरफ, पति जब पत्नी की मांग पूरी नहीं कर पाता तो पत्नी उसे छोड़ने की धमकी देती है, कभी-कभी छोड़कर चली भी जाती है। जहाँ एक-दूसरे के सहयोगी बनने का था, वहाँ स्वार्थ के कारण असहयोगी बन पड़ते हैं। अत: सम्बन्धों को मधुर बनाए रखने के लिए स्वार्थ का त्याग जरूरी है। स्वयं से पूछना होगा कि स्वार्थ बड़ा या सम्बन्ध?

दुर्गुणी स्वभाव

सम्बन्धों में जहर घोलने वाला दूसरा शत्रु है मनुष्य का स्वयं का जहरीला स्वभाव, अहंकारी भाव, चिड़चिड़ापन या मिलनसार होकर नहीं रहना। मनुष्य इन अवगुणों के कारण न किसी को सुख दे पाता है और न किसी से सुख ले पाता है। अत: हम सभी को स्वभाव मीठा बनाना पड़ेगा। मीठे स्वभाव से ही हम दूसरों के दिलों पर राज्य कर सकते हैं।

बाहरी साधनों पर निर्भरता

आज की दुनिया में हम सभी एक-दूसरे के साथ सम्मुख जितनी बातें करते हैं उससे कई गुणा ज्यादा विज्ञान के साधनों के द्वारा बातें करते हैं। पति-पत्नी एक ही घर में रहते हुए, एक-दूसरे के साथ व्हाट्स-एप्प, फेसबुक अथवा अन्य साधनों से बातचीत करते हैं। आज हर कोई सुबह से लेकर रात तक सोशल मीडिया पर व्यस्त है। कोई अपना

स्टेटस अपडेट करने में लगा है तो कोई फोटो शेयर कर रहा है। आज सोशल मीडिया ही मनुष्य को अनसोशल बनाने में अर्थात् एक-दूसरे से दूर करने का मूल कारण बन चुका है। हम सोशल मीडिया के द्वारा नये दोस्तों के साथ सम्बन्ध तो जोड़ रहे हैं लेकिन जो सम्बन्ध पहले से हैं, क्या उनको निभा रहे हैं? अब यह सोचने का समय आ गया है कि क्या हम सही कर रहे हैं? इन बाहरी साधनों को आपसी सम्बन्धों में जगह न देकर, आपस में एक-दूसरे के नजदीक रहकर बातचीत के द्वारा मदभेदों को मिटाना आवश्यक है।

कामनाएँ

दूसरों से कामनाएँ रखना भी सम्बन्ध बिगाड़ना है। हम सभी को यह ख्याल रखना चाहिए कि हरेक व्यक्ति की अपनी क्षमता होती है। हर व्यक्ति से, हर प्रकार के कार्य हों, यह सम्भव नहीं। हमारे मन की कमानाओं से दूसरों की भावनाएँ बदलती हैं। कामनाएँ हमें कमजोर करती हैं। हमारे आपसी सम्बन्धों के बीच में दीवार बना देती हैं। हम एक-दूसरे से कामना रखने के बजाए सदा ही एक-दूसरे के सहयोगी बन कर जीयें। अगर हमें आपसी सम्बन्धों को सही रखना है तो एक-दूसरे के प्रति अटूट विश्वास रखना जरूरी है क्योंकि जहाँ विश्वास है वहाँ ही प्यार रहता है।

अवगुण दर्शन-वर्णन

कभी-कभी हम दूसरों की बीती हुई बात अथवा गलत कार्य को दिल में रखकर बार-बार उसका वर्णन करते हैं, जो कि सुन्दर सम्बन्धों को तोड़ने के लिये काफी होता है। संसार का नियम है कि हम जितना दूसरों का अवगुण वर्णन करेंगे, वह अवगुण मेरे पास ही लौटकर आएगा। हम मन्दिर में जाकर मुक्त कंठ से गा तो लेते हैं, ''हे प्रभु, मोरे अवगुण चित्त न धरो" परन्तु दूसरों के अवगुण चित्त पर धरने में हम जरा भी देर नहीं करते। अगर सम्बन्धों को ठीक रखना है तो हमें दूसरों के अवगुणों को नगण्य समझना होगा। साथ-साथ घर में या कार्यस्थल पर एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या-भाव, नीचा दिखाने की भावना को त्याग कर एक-दूसरे के परिपूरक होकर रहना है।

उपरोक्त सभी बातों को धारण करने के लिए हमें राजयोग का अभ्यास करना अत्यन्त आवश्यक है। राजयोग एक ऐसा माध्यम है जो हमारे सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ कर जीवन को दिव्य गुणों से भर देता है। राजयोग हमारी समझदारी को बढ़ा देता है। दूसरों की छोटी-छोटी गलतियों का पहाड़ न बना कर हम उन्हें क्षमा करते चलें। शुभभावनाओं में बड़ा भारी बल है। शुभभावना के द्वारा बिगड़े हुए सम्बन्धों को सुधारा जा सकता है। कोई हमारा कितना भी बुरा सोचे, हम उसका भला ही सोचें, इससे दूसरों की उन्नति के साथ-साथ हम खुद भी उन्नति कर पायेंगे। यह कला अगर हमने सीख ली तो समझ लीजिए, सुखी जीवन और सम्बन्धों को खूबसूरत बनाने की महान कुँजी हमारे हाथ लग गई। तो आइये, हम सभी वसुंधरा को सुंदर बनाने हेतु आपसी सम्बन्धों में मिठास घोलें और समरसता लाएँ। ■■■

श्रद्धांजली

प्यारे साकार बापदादा के हस्तों से पले, दादियों के अति लाडले वल्लभ भाई, जिन्होंने बाल्यकाल में ही पटना से ज्ञान प्राप्त किया। ज्ञान लेते ही आप दादियों के साथ सेवा में लग गये। सन् 1967 में आप यज्ञ में आये और प्यारे साकार बापदादा की पालना लेते, अथक बन यज्ञ की अनेक प्रकार की सेवाओं में सहयोगी बन गये। आप यज्ञ रक्षक, यज्ञ स्नेही, सदा हाँ जी का पाठ पढ़ने वाले और बड़ों की दुआओं के पात्र रहे। आपने पहले भण्डारे में दूध डिपार्टमेंट सम्भाला और गांव के दूध वालों से आपका बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध रहा। ओरिया और सालगांव के लोगों से विशेष सम्पर्क होने के कारण आप पीसपार्क और ज्ञान सरोवर की जमीन लेने के निमित्त बने।

आप भोलानाथ के भण्डारे में प्रयोग होने वाली हर चीज़ बहुत एकानामी के साथ खरीद करते थे। अनाज के साथ-साथ, डीजल-पेट्रोल, खाने का तेल तथा अन्य सभी प्रकार की खरीददारी के कारण आपका सब तरफ के भाई-बहनों से बहुत अच्छा स्नेह रहा। मधुरभाषी, मिलनसार तथा सबको सम्मान देकर उन्हें यज्ञ की सेवाओं में सहयोगी बनाना, यह आपकी विशेषता रही। यज्ञ में जो भी विशेष सेवायें होती उन सबमें आप सदा एवररेडी रहते। आपको काफी समय से डाइबिटीज़ थी। हार्ट की तकलीफ भी थी। फिर भी आप उनकी परवाह किये बिना सदा सेवा में लगे रहते। पिछले एक-दो मास से आपकी तबियत कुछ बिगड़ती गई। आप 8 सितम्बर को, रात को 10.30 बजे 71 वर्ष की आयु पूरी कर, अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चले गये।

ऐसे अथक सेवाधारी, यज्ञ रक्षक, अनन्य रत्न को सम्पूर्ण दैवी परिवार स्नेह श्रद्धांजली अर्पित करता है।

पृष्ठ 9 का शेष भ ाग

खुलापन न हो तो उनमें घुटन घर कर जाती है। सामने वाला वहाँ से निकलने के रास्ते ढूँढ़ने लगता है।

संबंधों में प्यार सिर्फ तभी पनपता है जब आजादी हो अभिव्यक्ति की। अपने दिल को इतना तंग न बनाएँ कि कोई आपसे डरता रहे। मित्र बनें, हिटलर नहीं। हमेशा ईश्वर को अंग-संग महसूस करें। आपकी हर कोशिश के बाद भी अगर रिश्तों में खटास आ रही है तो उस परमात्मा से बातें करें। अपने मन की बात उसे बताएँ। कोई आपको समझे या न समझे लेकिन परमात्मा पिता से आपको बहुत ही सुन्दर उत्तर जरूर मिलेगा और विश्वास रखिए, आपने कुछ गलत नहीं किया तो आपके साथ गलत नहीं होगा। वो सर्वशक्तिमान बहुत बड़ा न्यायाधीश है। वो अन्याय करना नहीं जानता। अपनी समस्या उससे शेयर करके निश्चिंत हो जाएँ और प्रसन्नचित्त रहें। सब अच्छा होगा। ■■■

मेरे संग संग चलते हैं बाबा .....

■■■ ब्रह्माकुमारी भगवती देवी, हाथरस (उ. प्र.)

मेरा जन्म कृष्ण के जन्मस्थान माने जाने वाले मथुरा के गाँव बन्दी में लगभग 80 वर्ष पूर्व हुआ। इसका नाम उसी बन्दीगृह के कारण बन्दी माना गया है जिसमें यादगार ग्रन्थों में श्री कृष्ण का जन्म हुआ बताते हैं। यूं तो सभी देवात्माओं को परमात्मा समझती थी परन्तु आरम्भ से ही श्री कृष्ण से बहुत लगाव था। रात्रि के जिस वक्त में कुत्ते मौहल्ले में भौंकते हैं उस वक्त (दो से ढाई के मध्य) स्नान करके मन्दिर की ओर प्रस्थान करना दिनचर्या में शामिल था। कोई भी परिस्थिति आ जाती तो उसके निदान के लिए अपने इष्ट श्रीकृष्ण को कहती थी और धमकी भी देती थी कि अगर कार्य इस प्रकार से सम्पन्न न हुआ तो कल से पूजा करना बन्द हो जायेगी। वाकई ऐसा होता था कि वह समस्या उसी प्रकार से जीवन से निकल जाती थी जिस प्रकार मक्खन में से बाल निकल जाता है।

खोजते रहे, भटकते रहे, चप्पलें घिसते रहे, माथा रगड़ते रहे तब जाकर एक को जानने और पाने की चाह आज से लगभग 33 वर्ष पूर्व सम्पन्न हो गई। जिसे मंदिरों, गुरुद्वारों, मजारों पर ढूंढ़ा, खोजा उसने खुद ही खोज लिया। उसने कहा, बच्ची, तुम थक गई हो, तुम्हारी जन्म-जन्मान्तर की थकान दूर करने मैं आया हूँ। ऐसे महावाक्यों को सुनकर मन गद्‌गद् हो गया। अब रोज बाबा से बातें करने में आनन्द आता है। जो भी मन में बात होती है, बाबा से कहती हूँ, उसका जवाब भी फौरन मिलता है।

घर से कहीं जाना होता है, तो जरूरी सामान के साथ-साथ हजारों भुजाओं वाले को भी साथ ले लेती हूँ। किसी दो हाथ वाले का साथ लेते हैं तो वह भी एक दिन तो साथ छोड़ ही देगा या बैग भी उठाने पर बोझिल महसूस करेगा लेकिन वह हजारों भुजाओं वाला तो कभी थकता नहीं। वह कहीं भी, किसी से भी मदद करा देता है, वह भी बिना किसी अहसान के।

यूं तो बाबा के साथ के अनुभव तमाम हैं लेकिन कुछ समय पूर्व जो हुआ वह बता रही हूँ। माउण्ट आबू (मधुबन) गई हुई थी। शान्तिवन में ठहरना हुआ। पैर और कमर में दर्द होने के कारण अपने ठहरने के कमरे से बाबा का कमरा दूरी पर लग रहा था। सोच रही थी कि ये वही पैर हैं, जिनसे रचना (श्रीकृष्ण) की कर्मस्थली मानी जाने वाली मथुरा-वृन्दावन आदि की चौरासी कोस (दो सौ बावन किलोमीटर) की परिक्रमा आठ दिन में तेज धूप, भयंकर बरसात, आँधी और तूफान में करके आ गई थी परन्तु आज तीन सौ मीटर दूर बाबा के कमरे में जाने में ये साथ नहीं दे पा रहे हैं। काश! कोई सवारी (ई-रिक्शा जो बुजुर्गों के लिए अक्सर शान्तिवन में चलते हैं) मिल जाती। यह सोचकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। समय से पूर्व ही क्लास में और बाबा के कमरे में योग के लिए निकलने की आदत है। आसपास कोई नहीं था। तभी बाबा के कमरे के सामने एक बड़ी-बड़ी आँखों और अच्छी हेल्थ की बहन, जिससे कभी परिचय भी नहीं हुआ था, दूर से बाबा की ही तरह बाँहों को आगे करते हुए आई और बाँहों में भरकर, छाती से लगाकर बोली कि बाबा साथ है, और क्या चाहिए! उसके इतना कहते ही और सीने से लगाते ही जैसे कि सारी थकान दूर हो गई। पीछे पलट कर देखने पर वह दिव्यात्मा आँखों से ओझल हो गई। अहसास हो गया कि बाबा साथ है।

'मेरे संग-संग चलते हैं बाबा....' यह गीत गाती रहती हूँ। आप भी गाइये और साथ का अनुभव करते रहिए। ■■■

"मेरे साथ क्या हो रहा है" इसे छोड़ "मुझे क्या करना है" इस पर ध्यान दो

■■■ ब्रह्माकुमार विनायक, स ोल ार प्ल ांट, श ा न्तिवन, आ

इस सृष्टिनाटक में कुछ आत्माएँ सफलता पाकर मानव-कुल में उदाहरणमूर्त बन इतिहास रचते हैं। लोग उनकी जयंती मनाते हैं, विद्यार्थियों को उनका चरित्र पढ़ाया जाता है, उनकी प्रतिमाएँ चौराहों पर स्थापित होती हैं, उत्सवों के दिन उन पर माला चढ़ाकर लोग उनका गुणगान करते हैं तथा उनका अनुकरण करने की शपथ लेते हैं। दूसरी तरफ कुछ आत्माओं का जीवन कारागृहों में सलाखों के पीछे या मानसिक अस्पतालों में ऐसे बीत जाता है जैसे कि उनका इस दुनिया में कोई अस्तित्व ही नहीं। मनुष्य-मनुष्य के बीच यह महान अंतर क्यों?

अन्तर है परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया का

कैदियों और मानोरोगियों को उनकी इस दुखदाई अवस्था के बारे में एक बार पूछा गया। कैदी कहते हैं, जब हमारे साथ अन्याय हुआ, किसी ने हमारे साथ गलत व्यवहार किया तो हम सहन नहीं कर सके, क्रोध के वश गलत काम कर लिया। मनोरोगी कहते हैं, हमको तकदीर ने साथ नहीं दिया, किसी की मदद नहीं मिली, मित्र-संबंधी दुश्मनी करते रहे, जीवन-साथी ने धोखा दिया, मेरे अच्छे स्वभाव का गलत इस्तेमाल किया गया, सभी मेरा मजाक उड़ाते रहे, मेरा अपमान हुआ, मेरे साथ दुर्व्यवहार हुआ आदि-आदि। इन सब बातों का सार यही निकलता है कि ये हर कदम पर यही देखते रहे कि ''मेरे साथ क्या हो रहा है"।

जो सफलता के शिखर पर पहुंचे हैं, जब उन से पूछा गया कि आपकी सफलता का राज़ क्या है, तो उनके उत्तर इस प्रकार थे कि यह मेरा सपना था, समाज का कुछ उपकार करना ही जीवन का उद्देश्य था, हर कदम मुझे मंजिल ही दिखाई देती थी, प्राणों की बाजी लगाकर भी मुझे यह साधना करनी ही थी आदि-आदि। इससे स्पष्ट है कि इतिहास रचने वाले सदा ही सोचते रहे कि ''मुझे क्या करना है"।

प्रत्यक्ष उदाहरण

''मुझे क्या करना है" इस महामंत्र ने समाज को कई अमूल्य उपहार प्रदान किये। जिस बालक को निम्न जाति का समझकर पानी छूने से भी समाज ने मना किया था वह बालक भारतीय संविधान का निर्माण कर भारतरत्न डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर कहलाया। मैडम क्यूरी जब बालिका थी तब उनके पास स्कूल में दाखिल होने के लिए भी पैसे नहीं थे, फिर भी, विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक बन दो नोबेल पुरस्कारों की पात्र बनी। बुद्धिमंदता के कारण स्कूल से निकाला हुआ अल्बर्टआइंस्टीन नाम का एक बालक आगे चलकर सापेक्ष सिद्धान्त का पितामह बना। एक बालक के माँ-बाप ने समाज के क्रूर साम्प्रदायिक नियमों के दबाव में आकर जल समाधि ले ली, पर आगे चलकर वह बालक आध्यात्मिक साधना के शिखर पर पहुंच संत ज्ञानेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक रीति से इनके साथ अनेक अनुचित घटनाएँ घटी लेकिन आश्चर्य तो इस बात का है कि बेहद कष्टकर परिस्थितियों में भी इन्होंने अपनी साधना को जारी रखा और असम्भव को सम्भव में परिवर्तित किया। इस उपलब्धि का आधार केवल एक ही लक्ष्य पर इनकी एकाग्रता थी कि ''मुझे क्या करना है"।

एक हानिकारक निर्णय

एक साधारण मानव को जीवन में यदि प्यार और सहयोग मिलता है तो वह औरों को भी ये सब देना चाहता है परन्तु अगर उसके साथ अन्याय हुआ, दुर्व्यवहार हुआ या वह ठगी का शिकार हुआ तो वह भी इन्हीं दुर्गुणों के मार्ग पर चलना चाहता है। 'जब मुझ पर समाज ने अपकार किया तो मैं उस पर क्यों उपकार करूँ', ऐसा सोचकर वह समाज से बदला लेने या समाज को सबक सिखाने का

निर्णय ले लेता है। लेकिन यहाँ दो कटु सत्य जानने आवश्यक हैं। पहला सत्य, बदला लेकर सबक सिखाना, यह विधि इस सृष्टि-नाटक में यथार्थ नहीं है, इस विधि से किसी में भी परिवर्तन नहीं आ सकता। अगर परिवर्तन आता भी है तो वह नकारात्मक होगा, न कि सकारात्मक। इस विधि को अपराध कहा जाता है, न कि समाज सेवा। दूसरा सत्य, दूसरों को सबक सिखाने के पीछे 'मुझे क्या करना है' इस बात को भूल 'जो हो रहा है' उसी जाल में हमारा अमूल्य समय नष्ट हो जाता है अर्थात् आयु नष्ट हो जाती है जिसको हम कभी वापस पा नहीं सकते।

जो व्यक्ति अपने साथ होने वाली बातों को ही महत्व देता है, वह सृष्टि-नाटक का खलनायक बन जाता है और करने वाली बातों पर ध्यान देकर जो सुकर्म करता है, वह सृष्टि-नाटक का हीरो बन जाता है।

आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले पुरुषार्थियों के सामने आपसी संस्कारों का टकराव, सुविधाओं का अभाव, असहनीय बातों का सामना आदि के रूप में कभी भी विघ्न प्रकट हो सकता है। तब कई बार, ज्ञान की धारणाओं की कमी के कारण, यह संकल्प चल सकता है कि हमने तो सब कुछ त्याग कर आध्यात्मिक जीवन को अपनाया लेकिन लगातार हमारे साथ ऐसी बातें क्यों हो रही हैं, जो होनी नहीं चाहिएँ? साथ-साथ एक नकारात्मक संकल्प यह भी उठेगा कि शायद मैं आज्ञाकारी, नम्र, शान्तस्वरूप होकर चलता हूँ इसीलिए मेरे साथ ऐसी बातें घटती हैं, परन्तु अब से आगे मुझे कड़क होकर रहना है, झुकना नहीं है। इस विनाशकारी संकल्प के साथ ही आध्यात्मिक जीवन का पतन आरंभ होता है। यह संकल्प अकल्याणकारी भविष्य का बीज है।

ज्ञान के सागर परमात्मा शिवपिता ने कर्म की इस गुह्यगति को स्पष्ट किया है कि दुख का कारण हमारे पूर्वजन्मों के कर्म हैं जो चुक्ता होने ही हैं। इसमें संपर्क में आने वाले व्यक्ति या स्थान का कोई दोष नहीं है।

जब हम रोज़ाना अपनी दिनचर्या की जांच करते हैं तो एक चिंताजनक बात यह देखने में आती है कि हमारे अधिकतर संकल्प 'जो हो रहा है' उस बात पर केन्द्रित हैं, न कि 'जो करना है' उस पर। इस संस्कार को हमें शीघ्र ही परिवर्तन करना होगा। हमारे पुरुषार्थ का अंतिम लक्ष्य है स्वयंप्रिय,लोकप्रिय और प्रभुप्रिय बनना। जो अपने साथ 'क्या हो रहा है' उन बातों को न देख 'जो करना है' अर्थात् 'कदम-कदम पर शिवपिता के श्रीमत पर चलना है' इस बात पर दृढ़ रहता है, वही उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त कर गायन योग्य और पूजन योग्य बनता है।

एक विद्यार्थी के परीक्षा देने के बाद परीक्षक इस आधार पर मूल्यांकन करता है कि उसने क्या लिखा है, न कि इस आधार पर कि विद्यार्थी के साथ क्या हो रहा था। वैसे ही अंत में धर्मराज केवल यही प्रश्न हमसे पूछेंगे कि तुमने क्या किया? न कि यह प्रश्न कि तुम्हारे साथ क्या हुआ था? ■■■

कहीं गाड़ी छूट न जाए

ब्रह्माकुमार मदनमोहन, ओ.आर.सी, दिल्ली

जल्दी कर लो भाई, संगमयुग की गाड़ी छूटने वाली है।
निकल गई एक बार अगर तो, फिर न रुकने वाली है।।

आखिरी सीटी बज चुकी है, क्या देख रहे हो इधर-उधर।
पीछे छोड़ जिसे आये, फिर क्यों जाती है नज़र उधर।।

कहते अब भगवन, हे बच्चे, अब न चलेंगे नाज़ और नखरे।
पैकिंग हो सम्पूर्ण तुम्हारी, संकल्प रहें न कोई बिखरे।।

अन्तर्मुखता की सीट पे बैठो, शिव साजन के हाथ में हाथ।
शुभ-चिन्तन का हो तकिया, करो सफर की अब शुरुआत।।

पुरुषार्थ के कदमों को, अब तीव्र तुम्हें करना होगा।
सदा अलर्ट और एक्यूरेट, अब तुमको बनना होगा।।

लेके ज्ञान की तलवार, सदा ड्रामा की हो ढाल।
कवच योग का पहना हो, मर्यादा का रहे खयाल।।

परचिंतन की बू से दूर, स्वचिंतन से हो भरपूर।
मुरलीधर की मुरली में, खोये-खोये इस जग से दूर।।

नुमा शाम के योग से भर लें मन में शक्ति अपार।
अमृतबेले अमर भव के वरदानों से हो श्रृंगार।।

मुरली मंथन, मुरली चिंतन, मुरली की हो अमृतधार।
शिव के सिवा कोई न दूजा, शिव ही जीवन का आधार।।

रूहानियत के पंखों से बस अब उड़ते जाएँ।
संगम के अन्तिम पल हैं, कहीं गाड़ी छूट न जाए।।

बुराई का अभिमान और अच्छाई का अभिमान

■■■ ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टिकमगढ़ (म.प्र.)

अपनी धारणा और कर्मों को नैतिकता की सीमाओं में बाँधे बिना और दूसरों के अधिकारों की परवाह किए बिना, स्वार्थ के अनुसार सही मानना अहंकार कहलाता है। उन्हें बलपूर्वक दूसरों पर लादने का प्रयास उसका दुखदायी रूप है। काम, क्रोध, लोभ, मोह में व्यक्ति अंधा होता है पर अहंकार के वश वह उल्टा (विपरीत बुद्धि) हो जाता है अर्थात् उसकी दशा मूढ़मति वाली हो जाती है। इसके प्रतीक रूप में रावण दहन के समय उसके सर के ऊपर गधे का शीश लगाया जाता है। कारण यह है कि महान ज्ञानी, विद्वान, पंडित होने के बाद भी उसने अपने ज्ञान का प्रयोग अपनी बुराइयों को जीतने के लिए नहीं बल्कि तर्कों द्वारा, बलपूर्वक और हठपूर्वक अपनी बुराइयों को सही सिद्ध करने के लिए ही किया जिस प्रयास में उसका समूल विनाश हुआ।

मैं-पन का रोग

मैं-पन के रोग की यह कहानी किसी एक रावण की नहीं वरन् सारे विश्व की मनुष्यात्माओं की है जिनमें कम या ज्यादा कुछ न कुछ मैं-पन का रोग बैठा ही है और जब यह रोग मनसा व व्यवहार में प्रकट होता है तो तत्क्षण अवस्था विपरीत बुद्धि हो जाती है और कार्य दुखदायी हो जाते हैं। इसीलिए रावण शब्द का अर्थ ही रुदन (रुलाने) कराने वाला कहा गया है। महानता की सर्वोच्च मंजिल पर पहुँचने के लिए इस शत्रु पर विजयी होना अनिवार्य है। यह ऐसा शत्रु है जो महाज्ञानियों को भी नहीं छोड़ता और पल भर में ज्ञान के विशाल भण्डार को ऐसे मिटा देने की ताकत रखता है जैसे कि वो भण्डार था ही नहीं।

इस बुराई के विकृत रूप से सभी परिचित हैं। दुराचरणों के वृतान्तों से शास्त्र, पुराण और ग्रन्थ भरे हुए हैं। इतिहास में भी और वर्तमान में भी ऐसे समाचारों की भरमार है परन्तु आज हम एक नए अभिमान की चर्चा करेंगे, वो है अच्छाई का अभिमान।

अच्छाई का अभिमान बना देता है महत्त्वाकांक्षी

अच्छाई का अहंकार बुराई के अहंकार से ज्यादा घातक है। अच्छाई अर्थात् अपने गुणों, विशेषताओं, योग्यताओं, पद व महिमा का अभिमान रखने वालों की यह कमजोरी ही भविष्य में उन्हें स्वार्थी बनाती है और कर्त्तव्य के पथ से डिगा देती है। कारण बनता है अपनी अच्छाई के द्वारा आदर्शों का महान जीवन जीने के बजाय महत्वाकांक्षा वाला जीवन जीने की लालसा जाग उठना। अपने कल के जीवन से अपने आज के जीवन को गुणों के आधार से बेहतर बनाने के पुरुषार्थ के स्थान पर दूसरे के आज से अपने आने वाले कल का स्थान ऊँचा बनाने की अशुद्ध महत्वकांक्षा होना। स्वयं से स्पर्धा करने के स्थान पर दूसरों से स्पर्धा करने लगना। ध्येय धीरे-धीरे बदल कर पुरुषार्थ से प्रलोभन की ओर अग्रसर हो जाना। ईश्वर से मिले सद्गुणों के वरदानों को अपना सौभाग्य समझना, यह सहज आंतरिक खुशी का साधन है। यह खुशी दूसरों से मांगने की जरूरत नहीं होती। कहा भी गया है कि सत्य का पुरस्कार, सत्य में ही निहित है जिसका रूप है सन्तुष्टता और आत्मसम्मान। परन्तु जब अच्छाइयों पर अभिमान होने लगे तो उनकी कीमत पाने की कामनाएँ पैदा होने लगती हैं जो धीरे-धीरे तृष्णाएँ बनना शुरू हो जाती हैं। अच्छाई का मूल्य पाने की इच्छा में अच्छाई का मूल्य वैसे ही घट जाता है जैसे सोने में अलाय मिला देने से गुणवत्ता और मूल्य दोनों कम हो जाते हैं। महानता के द्वारा साधारणता खरीदना यह कहाँ की समझदारी है?

त्रिशंकु जैसी स्थिति

अच्छाई के अभिमान की कमजोरी, बुराई के अभिमान वालों की ताकत बन जाती है। फिर अच्छाई के अभिमान वालों की स्थिति त्रिशंकु जैसी हो जाती है। न वे अच्छे लोगों का दिल जीत पाते हैं और न ही बुरे लोगों को परास्त कर पाते हैं। तब वे आदर्शों के सिद्धांतों को छोड़

कर सुविधा के सिद्धांतों को अपनाना शुरू कर देते हैं और आवश्यकतानुसार अच्छे व बुरे दोनों प्रकार के संस्कारों वाले व्यक्तियों के साथ समायोजन करने का प्रयास करके अपनी हद की मान-प्रतिष्ठा और महिमा प्राप्ति की भागदौड़ में लगे रहते हैं। खुशामद करने वालों को अपना हितैषी और त्रुटियाँ बताने वाले को अपना विरोधी समझने लगते हैं। स्नेह के संबंधों की जगह शर्तों के संबंध स्वीकारने लगते हैं परन्तु यह महसूस नहीं कर पाते। ऐसी आत्माओं के लिए महान उद्देश्यों की पूर्ति में मजबूत कड़ी बनना कठिन हो जाता है। वे व्यक्तिगत मापदण्डों को श्रेष्ठता की सीमाएँ मान लेते हैं और बेहद के भाव को हद में सीमित कर देते हैं।

साथी बन जाते हैं प्रतिद्वन्द्वी

घमंडी लोग कैसी भी प्रकृति के हों, वे दूसरों को निज स्वार्थ के लिए कितने भी कष्ट क्यों न देते हों पर साथी-स्वजनों से घुल-मिलकर रहते हैं। दूसरों को दुख देते हैं पर स्वजनों को सुख देने की चेष्टा करते हैं, उनसे प्रेम करते हैं, उनका ध्यान रखते हैं क्योंकि वे उनके साथी हैं, प्रतिस्पर्धी नहीं। एक चोर दूसरे चोर या एक अवगुणी दूसरे अवगुणी की निंदा करके क्या पाएगा बल्कि उन्हें एक-दूसरे की आवश्यकता होती है। इसके उलट, जिन्हें अच्छाइयों व सत्कार्यों का घमण्ड हो जाता है, उनका मंत्र हो जाता है कि मैं ही सही हूँ। वे दूसरों के आगे अपनी अच्छाइयाँ सिद्ध करने के लिए श्रेष्ठ लोक व्यवहार व नैतिकता को प्रकट करते हैं लेकिन अपने साथियों-स्वजनों से द्वेष और प्रतिस्पर्धा करते हैं क्योंकि अनजाने में उनके लिए सेवासाथी, साथी न होकर प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं। ऐसे विपरीत ज्ञानी, दूसरे ज्ञानी की निंदा व दोष सिद्ध करने में अपना यश और श्रेष्ठता का अनुभव करते हैं, जो होता मात्र भ्रम ही है परन्तु लगता सच से बढ़कर है।

विदेशियों का दमन स्वीकार था, पर स्वदेशियों का सहयोग नहीं

भारत का इतिहास ऐसे वृतांतों से भरा पड़ा है। नैतिकता व मूल्य भारतीय संस्कृति की नींव रहे हैं परन्तु मूल्यों और श्रेष्ठता के अभिमान की प्रतिद्वंद्विता में भारतीय शासक कभी एक न हो सके जिसका ही दुष्परिणाम है कि बार-बार लगातार भारत, विदेशी आक्रमणों से आहत और अपमानित हुआ। वे विदेशी आक्रांताओं और उनकी गुलामी से लज्जित नहीं हुए लेकिन स्वदेशी साथियों का सम्मान व उन्नति देखना उनके लिए अपमान का विषय था। विदेशियों का दमन उन्हें स्वीकार था पर स्वदेशियों का

सहयोग नहीं। वे राजा अच्छे थे क्योंकि कभी उनकी ओर से दूसरे देशों या धर्म-संस्कृतियों पर आक्रमण नहीं हुए। अपनी भूमि पर सबको शरण दी पर किसी दूसरे की भूमि नहीं छीनी। कमाल की बात तो यह है कि अपने शासनकाल में मुगलों और अंग्रेजों को यह कहने का अवसर नहीं मिला कि भारतवासी नकमहराम हैं क्योंकि जो भारतीय उनकी सेवा में रहे, पूरी ईमानदारी व निष्ठा से रहे लेकिन स्वदेशी व देशवासियों के साथ धोखे और विश्वासघात के कितने ही प्रसंग हमने सुने होंगे। कारण है श्रेष्ठता के अहं और द्वेष मिश्रित खोखली अच्छाई। औरों के दोष तो स्वीकार कर लिए पर स्वजनों को क्षमा और सहयोग न दे सके। ऐसे लोगों को बाद में फिर उन आक्रांताओं के हाथों आघोषित गुलामों की भांति अपमानित जीवन जीना पड़ा। जिसने स्वार्थ के लिए स्वजनों का निरादर कराया, दूसरे उसे भला क्या इज्जत देंगे? अपनों को नीचा दिखाने के लिए दूसरों का सहारा लिया और परिणाम यह हुआ कि दोनों की ही नजरों से गिर गए।

अहंकार का कीड़ा लगी हुई अच्छाई वाले मनुष्य न तो अपनी अच्छाई को शक्तिशाली बना पाते हैं और न बुराई को मिटा पाने में सक्षम ही बन पाते हैं। इसी स्थिति में कुप्रवृत्ति वाले व्यक्ति संगठित होकर ऐसे लोगों पर अपना शासन करते हैं।

तो हे ज्ञानियो! सावधान, इस मादक जहर से मुक्त होना हमारे लिए अनिवार्य है क्योंकि इस बुराई से ग्रस्त जीवन रूपी वृक्ष परिस्थितियों की हवाओं से नहीं बल्कि अपनी भूमिगत जड़ों के खोखला होने से गिर जाता है। इस रोग की दवा है त्याग, आत्मसम्मान और सत्यता की शक्ति। तो आइये, निश्चित करें कि हमें अहम् की तुष्टि नहीं बल्कि सेवा और त्याग की संतुष्टि प्राप्त करनी है और स्वार्थ पर विजय पानी है। यही समय की मांग है। ■■■